इस्लाम दर्शन

अल्लाहके नाम से , जो सबसे ज्यादा परोपकारी और परम दयालु है ।

अपनी पहचान को बरकरार रखते हुए कतर के राज्य ने दूसरी संस्कृती व सभ्यताओं के लिए अपने दरवाजे खोल दिए हैं । अपनी अदभुत रचना और सर्पाकार मिनार के साथ ‘ फनार ’; कतरी इस्लामी संस्कृति केन्द्र द्ब सम्पूर्ण मानव जातिको प्रकाश प्रदान करके मार्गदर्शन करनेवाले सबसे बडे महत्तवपूर्ण स्थानों में से एक है ।

कतरी सभ्यताका स्रोत इस्लामिक सभ्यता ही है और हमारा मकसद इस किताब के जरिए सिर्फ इस देशका नहीं बल्की संसार के एक सबसे बडे समुदाय के आस्थाका बुनियदी गाइड आपलोगों को कराना है । जीवन का अर्थ व इसकी वास्तविक प्रकृति पर विचार करने वाले व आजकलके अनेक भ्रान्तियों में से कुछएक को दूर करनेका प्रयास करनेवाले आधुनिक विचारकों की तरफ हमने यह कार्य लक्षित किया है । कतर के अंदर और पूरी दुनियाके समुदायों के बीच इस कार्य के जरिए सेतुओं का निर्माण होगा एसा हम आशा करते हैं । आपको हम यह किताब देकर यह भी आशा करते हैं कि यह एक संकेत का काम करेगा और हमारे केन्द्र पर आनेके लिए प्रेरित करेगा ।

सुस्वागतम्

इस अवसवरको हम उन लोगों को धन्यवाद ज्ञापन करने के लिए भी प्रयोग करना चाहते हैं जिन्होंने पोस्टरों , पुस्तिकाओं और पुस्तकों के रुपमें ‘ इस्लाम दर्शन ’ श्रृंखलाको तैयार करनेके लिए मेहनत किया है । सारे लेखकों , प्रूफ रीडरों , डिजाइनरों और निर्माणकर्ताओं ने सिर्फ एक ही उद्देश्य से मेहनत किया है , वो उद्देश्य है अपने मालिक अपने परमेश्वर को प्रसन्न करना ।

मुहम्मद अली अल गामिदी
डाइरेकटर जनरल

TEL : +974 4425 0250 / 4444 7444 | FAX : +974 4425 0200 | P.O. Box 2204, Doha - Qatar | info@fanar.gov.qa | www.fanar.gov.qa

FANAR... A Way of Life

स्वागतम् أهلاً وسهلاً

फ़नार, क़तर इस्लामी सक़ाफ़ती मरकज़ (सांस्कृतिक केन्द्र) एक लाभ - निरपेक्ष (बग़ैर लाभ के) काम करने वाली तंज़ीम (संस्था) है जो समाज को इस्लाम के बारे में ज्यादह से ज्यादह मालूमात पहुंचाने का कार्य करती हैं।

'फ़नार' क़तर की बोल चाल की भाषा का शब्द है इसका अर्थ है, एक तेज़ चमकीली रोशनी जो एक ऊंचे मीनार पर लगी हो और खुले समुदरों में मौजूद मल्लाहों को किनारे वापिस आने में मार्ग दर्शन करें। इस तरह की रचनाओं में सबसे पुरानी और मशहूर रचना एलेग्ज़ेंड्रिया का रोशनी का मीनार है जो २९७ और २८० ठब के बीच बनाया गया था। बहरी सफ़र (समुद्री यात्राऐं) जो क़तरी विरासत का एक हिस्सा है, के लिये रोशनी का मीनार सुरक्षित घर लौटने के लिये एक पक्का रास्ता है।

'फ़नार' ठीक वैसे रूपक अलंकार की तरह प्रयोग करते हुऐ ज़रूरत मंद दिमागों को कभी न ख़त्म होने वाला सुकून और आराम की क़यादत (मार्ग दर्शन) कर रहा हैं। ज़िन्दगी का एक मुकम्मल तरीक़ा।

फ़नार का तस्वुर (दूरदृष्टिता)

हमारा मक़सद एक ऐसा संसार बनाना है जो क़यामत तक क़यादत करे, आलमी सतह तक पहुंचना और इस्लाम, जिन्दगी गुज़ारने का काबिले अमल (व्यवहारिक) रास्ता है इस संदेश को समस्त मानव जाति तक पहुँचाने के लिये संर्घष (जद्दो जेहद) करना हैं।

मक़सद (लक्ष्य)

- हम इस्लाम पर, जिन्दगी गुज़ारने के तरीक़े पर यक़ीन रखते हैं इसलिये अपने नज़रिये को पूरी मानव जाति तक पहुँचाने के लिये संघर्ष करते हैं।
- हम समुदायों और व्यक्तिगत (इनफ़रादी) तौर पर लोगों की ज़रूरतों और उनके विचारों के हिसाब से ख़िताब (संबोधित) करते हैं।
- जब हम लोगों को एक दूसरे की इज़्ज़त करने की सीख देते हैं तो हम एक दूसरे की मिली जुली मान्यताओं (क़दरों) तथा उच्च कोटि (अच्छे) नेक मापदण डों (मयारों) को उन तक पहुँचाने की पूरी कोशिश करते हैं।
- हमारा ईमान है कि हमारी कामयाबी की वजह हमारा इस्लाम में गहरा यक़ीन हैं।
- हम आलमी सतह पर उन लोगों तक पहुँचने को तैयार रहते है ओर उनसे बात करने को तैयार रहते है जिनका झुकाव अच्छे कामो और अच्छी नैतिकता की ओर होता है।

इस्लाम क्या है ?

एक अल्लाह में यक़ीन रखना ही इस्लाम है । वह (अल्लाह) बग़ैर किसी शक्ल व सूरत के एक उत्कृष्ट स्तित्तव है जिसको हम समझ सकते हैं।

अरबी भाषा में इस्लाम शब्द के अनेक अर्थ हैं । इस शब्द की उत्पत्ति 'सलाम' के मूल अक्षरों (सीन) (लाम) तथा (मीम) से हुई है। इन अक्षरों से इस्लाम शब्द के साहित्यक अर्थ का वर्णन है अर्थात आत्म समर्पण शांति तथा सुरक्षा । सलाम अल्लाह के गुणों में से एक है ।

एक मुसलमान ऐसी ''शख़्सियत'' होती है जो खुद को अल्लाह की इबादत के लिये पेश करता है। इसलिये वह सब जो अल्लाह के 'एक' होने के मूल संदेश पर यक़ीन रखते हैं मुस्लमान बनाये गये । इनमें तमाम नबी, आदम, नूह, मूसा व ईसा से लेकर मोहम्मद तक शामिल हैं (अल्लह उन सबको बरकत तथा शांति दे)

इस्लाम मानव जाति के लिये रहम (करूणा) बनकर आया यह मार्गदर्शन की एक पुस्तक के रूप में आया जिसको अल्लाह का शब्द 'कुर्आन' कहते हैं । यह १४०० वर्ष पूर्व प्रकट हुआ और आज तक बग़ैर किसी तबदीली के मौजूद है । यह किताब आख़री नबी मुहम्मद की शिक्षाओं के साथ दर्शाती है कि स्रष्टा के आदेशानुसार समस्त मानव जीवन के हर आयाम में चाहे भौतिक या आत्मिक हो, किस प्रकार का व्यवहार होना चाहियें ।

सृष्टि (रचना)

क्या हर एक इन्सान की यह प्रकृति नहीं है कि जब उसको ज़रूरत हो या वह बर्बाद हो गया तो वह आस्मान की तरफ़ देखता है ? जब नुक़सान में होता है तो अल्लाह से रोता है। जब निराश होता है तो अपनी आँखे उस उत्कृष्ट आस्तित्व की ओर उठाता है। यह समस्त मानव जाति का बहुत ही सहज़ व्यवहार (प्रकृति) है।

प्रत्येक मानव का एक कुदरती झुकाव इस ओर होता है कि वह जीवन के मक़सद के विषय में कुछ सवाल करे, हम क्या कर रहे हैं ? जीवन का उद्देश्य क्या है ? क्या कोई स्रष्टा है या यह सब खुद ब खुद अनियमित संयोग से प्रकट हो गया है ? जब तक इन सवालों का जवाब नहीं मिलता तब तक इन्सान की आत्मा को शंति प्राप्त नाहीं होती है और जीवन बग़ैर किसी मतलब के एक बेकार मेहनत महसूस होता है।

कुरान इन्सानो को दुनिया की यात्रा की दावत देता है, कि वह स्वंय इस संसार को देखे और सोचे (विचार) कि जीवन की सृष्टी किस तरह शुरू हुई ?

''कह दीजिए कि धरती पर चल-फिर कर देखो तो कि किस प्रकार से अल्लाह तआला ने प्रथमतः सृष्टि की उत्पत्ति की फिर अल्लाह तआला ही दूसरी नई उत्पत्ति करेगा। बेशक अल्लाह हर वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है''। (कुरान २९, २०)

भूमण्डल की सृष्टि (रचना)

हमारे चारों ओर फैली हुई विशाल एंव अद्‌भुत सृष्टी पर विचार करने पर हर एक इन्सान अपने चारों तरफ़ की दुनिया के बारे में गहराई से सोच सकता है और इस नतीजे पर पहुँच सकता है कि इस शानदार कायनात को बनाने वाला कोई रूपकार कोई रचनाकार अवश्य है।

जब आप इस पृष्ठि को पढ़ेंगे और उस सावधानी और सतर्कता के बारे में विचार करेंगे जिस सावधानी और सतर्कता से हर शब्द, पाठ, शक्ल और रूप को बनाया गया है, तो आप उस के डिज़ाइनर के बारे में आश्चर्य करेंगे, और उस समय के बारे में भी सोच सकेंगे जिसे हर व्यक्ति ने ध्यान पूर्वक तमाम अक्षरों और रंगों को चुनने में और हर पैराग्राफ को उसके स्थान पर रखने में लगाया है ताकि वह आप (पढ़ने वाले) पर गहरा प्रभाव डाल सके।

तुम्हारे बारे में क्या है पाठक ? तुम्हारी बनावट के बारे में क्या है ? तुम्हारे जटिल अंग, इस सुन्दर पोस्टर को देखते वक्त तुम्हारी आँखो की क्रिया, तुम्हारा हृदय जो इसके प्रत्येक शब्द को पढ़ते समय उत्तेजित होता है, मस्तिष्क जिसका तुम इस्तेमाल कर रहे हो जो किसी भी उपलब्ध मानव निर्मित कम्प्यूटर से अधिक तेज़ व अधिक ताक़त वर है, उन सबको किस ने बनाया है ?

इस धरती के विषय में क्या है जिस पर तुम खडे हो। जीवन विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान हर एक सिद्धान्त के विषय में क्या है, मूल शक्तियों जैसे गुरुत्वाकर्षण और विद्युतिय चुम्बकत्व से लेकर।

अणुओं तथा तत्वों की रचना को बारीकी व कुशलता से एक साथ पिरोया तब जीवन संभव हुआ।

अपने सौर मण्डल में स्थित पृथ्वी को देखो, पृथ्वी की अपनी परिक्रमा यदि बिल्कुल सही न होती तो पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं होता। हमारा सौर मण्डल अनेक सौर मण्डलों में से एक है। हमारा तारामण्डल आकाश गंगा ब्रहमाण्ड के १०,००० लाख तारा मण्डलों में से एक है वह सब एक व्यवस्था में हैं वह सब एक नियम के सहारे एक दूसरे से टकराये बग़ैर अपनी कक्षाओं में जो उनके लिये निर्धारित हैं, में तैर रहे हैं। क्या मानव उनकी इस बारीकी को क़ायम रखे हुऐ है क्या मानव उनको गतिशील रखता है ? क्या यह सब कुछ सिर्फ़ एक इत्तेफाक़ से एक स्रष्टा या रूपकार के बग़ैर केवल एक बड़े और तेज़ टकराव के नतीजे में वजूद में आ सका होगा ?

''उनको लिजिय जिन्होंने यक़ीन नहीं किया और यह नहीं माना कि स्वर्ग और धरती जो जुड़े हुऐ वजूद थे और हमने इनको अलाहदा (पृथक) किया और पानी से हर एक ज़िन्दी चीज़ बनाई ? तब भी क्या वे यक़ीन नहीं लायेंगे ?'' (कुर्आन २१,३०)

''बेशक स्वर्ग एंव धरती की सृष्टि तथा रात के बाद दिन तथा दिन के बाद रात के परिवर्तन में समझदारों के लिय निशान मौजूद हैं'' (कुर्आन ३, १९०)

''और उसने तुम्हारे लिये रात एंव दिन, सूर्य तथा चँद्रमा एंव तारे बनाये जो उसके आदेशों का पालन करते हैं बेशक इसमें समझदारों के लिय निशान हैं'' (कुर्आन १६, १२)

मानव जाति की सृष्टि

एक बार हम यह स्वीकार कर ल कि समस्त सष्टि का बनान वाला एक सष्टा ह तब हमका अपन वजद का जवाब ढ्ढना चाहिय। करान निम्नलिखित आयात म मनष्य की रचना की व्याख्या करता ह।

''ए इन्साना अपन इश्वर स डरा, जिसन तम्हारी एक आत्मा (आदम) स उत्पत्ति आर इसी आत्मा (आदम) स उसकी जाडी (हव्वा) का बनाया। आर इन दाना स समस्त स्‍ ी व परुषा का फलाया। उस अल्लाह स डरा जिसस तम मागत हा आर रिश्ता ताड्न स डरा बशक अल्लाह तम्हार ऊपर निगहबान ह'' (कआन ४, १)

अगर आपका बगर किसी वजह क ताहफ क बतार एक किताब या एक पय दिया जाय ता म यकीन क साथ कह सकता ह कि आप शक्रिया कहन का मजबर हा जायग। बशक रूपकार जा तम का तम्हारी आख, हदय आर फफड दिय, उसका धन्यवाद आभार तथा पशसा करनी चाहिय। अल्लाह हमका बताता ह कि हम उसकी इबादत कर, उसकी आज्ञा मानें और उसका आभार व्यक्त करें यही जीवन का मकसद है ;

''म न जिन्नात आर इन्साना का महज इसलिय पदा किया ह कि वह सिफ मरी इबादत करें'' (कुर्आन ५१, ५६)

हम जा कछ भी करत ह उसक लिय उसका आभारी हाना चाहिय। हमका जा भाजन, प्यास बुझाने के लिये पानी और तन ढ़कने के लिय जो कपड़े उपलब्ध कराता है उसको ध न्यवाद दना चाहिय। हर चीज म उसकी पहचान क निशान माजद ह।

जब मनष्य की सष्टि का जिक्र आता ह ता शरू म ही यह बात साफ कर दी गयी कि अल्लाह न मनष्य की सष्टि बकार म नही कि उसन धरती पर इश्वर का उत्ताधिकारी पदा कर दिया ह। मनष्य का दिव्य मागदशन क अनसार समस्त जीवा क बीच इन्साफ क साथ धरती पर शासन, खती आर उसकी दख भाल क काय साप।

''आर (कह दा ए महम्मद), आर जब तर रब न फरिश्ता स कहा कि म जमीन पर खलीफा बनान वाला ह '' (कआन २,३०)

मानव जाति की सष्टि म कद आर भी दिव्य विशषताए जस रहम, क्षमाशीलता तथा दयालता स्पष्ट ह।

क्या मौत के बाद जीवन है ?

मुसलमानों का विश्वास है कि जीवन एक अल्पकालिक (छोटे वक़्फे) की हालत है। यह भविष्य के न ख़त्म होने वाले जीवन की तैयारी मात्र है। धरती पर जीवन एक अंतिम चेतावनी नहीं है। मृत्यु अन्त नही केवल संसारों का परिवर्तन मात्र है। जीवन, भविष्य में दाखिल होने की सीढ़ी है। जिसके बाद जन्नत में हमेशा हमेशा ऐशो आराम या नर्क में यातनाऐं। अल्लाह क़यामत के रोज़ सब को जिंन्दा करेगा। उस दिन वह मानव जाति जिसको अक्ल की दौलत दी गयी, जिसको इच्छाओं के लिय आज़ादी दी गयी अपने कामों के लिय जवाबदह होगी। मानवजाति को चुनाव करने का अधिकार दिया गया था कि वह दिव्य मार्गदर्शन का अनुसरण करे और इस जीवन और इसके बाद के जीवन में न ख़त्म होने वाले इनामों की फ़सल काटे। मृत्यु के पश्चात के जीवन का यक़ीन इस्लाम में आस्था का एक स्तम्भ है।

''हर जिंन्दा चीज़ मौत का मज़ा चखेगी। और उस दिन जब मुर्दो को जिन्दा किया जायेगा (क़यामत के दिन) तुम को तुम्हारा पूरा मुआवज़ा दिया जायेगा। बस जिस व्यक्ति को आग से हटा लिया जाये और जन्नत में दाखिल कर दिया जाये वह कामयाब हो गया। इस दुनिया की ज़िन्दगी तो केवल एक धोके का उपभोग है'' (कुर्आन ३, १८५)

अल्लाह का अकेला होना : (‘एक’ होना)

‘अल्लाह एक है’ में विश्वास ही इस्लाम की सही बुनियाद है अल्लाह ने जन्म नही लिया और न कभी उसकी मृत्यु होगी। इस का सीधा प्रतिवाद (तरदीद) यह है कि सब की सृष्टि करने वाले ने स्वंय की सृष्टि की हो। अल्लाह किसी चीज़ की शक्ल वाला नहीं है। कुरान के निम्नलिखित अध्यायों में अल्लाह का जो वर्णन किया गया है उसके अनुसार हमारा मस्तिष्क, दृष्टि तथा विचार इसकी कल्पना कर सकते है।

‘‘आप कह दीजिये कि वह अल्लाह एक ही है। अल्लाह बे नियाज़ है (न खत्म होने वाला आश्रय) न इससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ और न कोई इसके समकक्ष (हमसर) है’’ (कुर्आन ११३, १-४)

मनुष्य द्वारा बनायी गयी किसी चीज़ के आगे सर झुकाना या औंधे मुंह लेटना सूझबूझ का फैसला नहीं है। प्रारंभ में सबसे पहला गुनाह थाा अल्लाह के साथ किसी को शामिल करना, मूर्तीयाँ बना कर उनको पूजना और उन मूर्तीयों को अल्लाह कहना और यह कहना कि यह अल्लाह का बेटा या अल्लाह का बिचौलिया है।

‘‘यक़ीनन अल्लाह अपने साथ किसी को शरीक (शामिल) बताने वालें को माफ़ नही करता लेकिन इसके सिवा जिसे चाहे माफ़ कर देता है। और जिसने अल्लाह के साथ शरीक मुक़रर किया उसने यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह किया’’ (कुर्आन ४, ४८)

इस्लाम में यक़ीन (आस्था) का बुनियादी असूल यह है कि अल्लाह का कोई बेटा या बिचौलिया नहीं है। उसने नबीयों को केवल मार्गदर्शन के लिये भेजा और स्वंय नबी भी मनुष्य थे। धर्म में धर्माधिकारियों की ज़रूरत के वग़ैर अल्लाह सीधे अपनी इबादत का हुक्म देता है। अल्लाह के अलावा किसी अन्य की इबादत जैसे किसी पादरी या सन्त या उनसे सहायता मागने वाला इस्लाम के ख़ारिज (बाहर) है। इससे हट कर अल्लाह को मानने वाले और उसके अल्लाह के बीच इबादत और अनुनय विनय बहुत ही व्यक्तिगत वस्तु है।

‘‘और यह नहीं हो सकता कि वह तुम को फरिश्तों और नबीयों को रब (अल्लाह) बनाने का हुक्म करें। क्या वह तुम्हारें मुसलमान होने के बाद भी तुम्हें कुफ़र (नास्तिक बनने) का हुक्म देगा’’। (कुर्आन ३, ८०)

अल्लाह की ख़ूबियां (गुण)

किसी के अपने हाथों द्वारा बनायी गयी चीज़ की पूजा (इबादत) या अपने ही जैसे मानव की पूजा आत्मा को शांति नहीं दे सकती है। फिर भी पूजा की जरूरत और श्रृद्ध का भाव हर एक इन्सान में कहीं गहरे तक है। इस्लाम में हम एक अल्लाह की इबादत को चुनते हैं। अल्लाह ने उसके विवेक से अपने कुछ नामों तथा विशेषताओं की सूचना के लिये हमारा चयन किया ताकि हम उसको अच्छी तरह समझ सकें।

यहाँ उसकी कुछ ख़ूबियों कि मिसालें (उदहारण) दिये जाते है; अल्लाह सब का बनाने वाला है, सब को जिसकी उसने सृष्टि की है का कायम रखने वाला है वह सब सुनता है सब देखता है तथा सब जानने वाला है। उसका वर्तमान, भूत तथा भविष्य का ज्ञान श्रेष्ठ है चाहे वह छुपा हो या न हो। वह निहायत रहीम, करीम और नेकी करने वाला है। वह खुद को कायम करने वाला व हमेशा रहने वाला है। उसको नींद की जरूर नहीं होती और न वह आराम करता है। उसका कोई साथी, बेटा, मां या बाप नहीं है। सारी इबादत सीधे उसी के लिये है। वह सुन्दरता को आकार देने वाला है,अच्छाई को बनाने वाला और वह रोशनी है और मार्गदर्शक है।

‘‘ वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह निहायत पाक, सब बुराइयों से। पाक साफ़ अमन देने वाला निगहबान, विश्वास में उच्च, खुद मुख्तार अल्लाह ऐसा बड़ाई वाला है पाक है अल्लाह उन चीजों से जिनको यह इसका शरीक बनाते हैं। वह अल्लाह है जो ख़ालिक है (सृष्टा), मोजिद (अविष्कारक) है और रूप देने वाला है, उसी के लिय निहायत अच्छे नाम हैं। हर चीज़ चाहे वह असामानों में हो या ज़मीन पर उसकी पाकी बयान (वर्णन) करती है। और वही गांलिब है हिकमत (बुद्धिमान) वाला है’’ (कुरान ५९, २३-२४)

अर - रज़्ज़ाक़ (जीविका देने वाला)

‘‘आप कह दीजिये : कि आओ मैं तुम को वह चीज़े पढ़कर सुनाऊँ जिनको तुम्हारे रब ने तुम पर हराम फ़रमा दिया (वह हुक्म देता है) है वह यह कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठहराओं और मां बाप के साथ अहसान (अच्छा व्यवहार) करो और गरीबी के कारण अपनी संतानों की हत्या मत करो हम तुम को और उनको रिज़क़ देते हैं (पूर्ति करते है’’) (कुर्आन ६, १५१)

अल-ग़फ़ूर (माफ़ करनेवाला)

‘‘बेशक मैं उन्हें बख़्श देने (माफ़ करने) वाला हूँ जो तोबा करें, ईमान लायें नेक काम करें सीधे रास्ते पर रहे’’ (कुर्आन २०, ८२)

अल क़य्यूम (क़ायम रखनेवाला / संपोषणीय)

‘‘अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहनेवाला और निगहबान है’’ (कुर्आन ३,२)

पांच सुतून (स्तंभ)

जैसा कि एक इमारत की बनावट और पायेदारी (स्थिरता) के लिय स्तंभ ज़रूरी होते है उसी प्रकार प्रत्येक मुसलमान के लिये इस्लाम में पांच सुतून (स्तंभ) महत्वपूर्ण हैं।यह स्तंभ मनुष्य के ईमान को मज़बूती देते हैं नियमित करते हैं औश्र मुसलमानों को आपस में भाई चारे में बांधे रहते हैं। पहला स्तंभ आस्था की घोषण (एलान) (शहादा), दूसरा स्तंभ प्रार्थना (नमाज), तीसरा अनिवार्य दान (ज़कात) चौथा उपवास (रोज़ा या सोम) और पांचवा तीर्थ - यात्रा (हज)

आस्था (ईमान) की गवाही

यह यक़ीन (ईमान) का अति महत्वपूर्ण स्तंभ है जिस में इस बात की गवाही है ''आल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक् नहीं है और मुहम्मद उसके अंतिम सन्देशवाहक (नबी) हैं''

यह तुम्हारे और अल्लाह के बीच एक क़रार (सहमति) है जो इस बात की पुष्टि करता है कि तुम 'एक' अल्लाह पर यक़ीन पर ईमान लाये हो और यह भी यक़ीन हो कि मोहम्मद उसके आख़री नबी है। इसके नतीजे में तुम मुस्लिम समाज का एक अंग बन जाते हो जो तुम को ज़िन्दगी के मक़सद और लक्ष्यों को प्राप्त करने में मददगार होता है।

प्रार्थना (नमाज़)

मुसलमान और अल्लाह के दरम्यान रिश्ता बहुत महत्वपूर्ण है और बग़ैर किसी बिचौलिये के सीधे उसकी प्रार्थना इन रिश्तों को और गहरा बना देती है। हमको एक दिन में पांच वक्त नमाज़ पढ़ने का हुक्म है जो हमको अल्लाह से क़रीब करने में मदत देती है हमको अच्छे रास्ते पर चलाती है और हमारे गुनाहों को धो डालती है।

''और प्रार्थना (नमाज़) क़ायम करो और दान (ज़कात) दो। और जो कुछ भलाई (अच्छाई) तुम अपने लिये आगे भेजोगे, सब कुछ अल्लाह के पास पाओगे। बेशक अल्लाह तुम्हारे कामो को देख रहा है'' (क़ुर्आन २, ११०)

फ़र्ज ज़कात (अनिवार्य दान)

अल्लाह फ़रमाता है कि जब तुम अपना जायज़ा ले चुको तो उनकी तरफ़ भी देखो जो तुम से कम भाग्यशाली हैं। शब्द ज़कात के अर्थ पाकी (पवित्रता) तथा बढ़ता हैं । एक ईमान वाला दूसरे की मदद के लिये अपनी पूंजी का एक भाग उस कम भाग्यशाली को साल में एक बार सौपंता है। इस ज़कात का मूल्यांकन उसकी पूंजी से २.५: के दर से होता है। यह मुसाफ़िरों, यतीमों (आनाथों) एंव निर्धनो को दिया जाता है। यह दूसरे दानों से भिन्न है क्योंकि यह वैकल्पिक नहीं है। इस्लाम में मान्यता है कि सब धन सम्पत्ति अल्लाह की अमानत है। इसको समाज की भलाई के लिय प्रयोग करना चाहिये ।

''उन्हें इसके सिवा कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें । इसी के लिये दीन (धर्म) को सच्चा रखे इब्राहीम हनीफ़ के दीन और नमाज़ को क़ायम रखें ज़कात देते रहें । यही दीन सच्चा और मज़बूत है'' (क़ुर्आन ९८,५)

उपवास (रोज़ा)

प्रत्येक वर्ष रमज़ान के महीने (चन्द्र वर्ष का नवांमहीना) में सब मुसलमान प्रातः से सूर्य के अस्त (डूबने) तक उपवास करते हैं । इसमें वे भोजन, जल एंव यौन संबंधो के प्रयोग से संयम बरतते हैं और यह सब अल्लाह की प्रशंसा पाने के लिये अच्छी नीयत से किया जाता है।

''रमज़ान का महीना (वह है) जिसमें क़ुरान उतारा गया जो लोगों को मार्गदर्शन करने वाला है और जिसमें मार्गदर्शन और हक़, नाहक़ की पहचान है । तुम में से जो भी इस महीने (का नया चांद देखकर) को पाये उसे रोज़ा रखना चाहिये और जो बीमार हो या मुसाफ़िर हो उसे दूसरे दिनों में यह गिनती पूरी करनी चाहिये । अल्लाह का इरादा तुम्हारे लिये आसानीयां पैदा करने का है सख़्ती का नहीं । वह चाहता है कि तुम गिनती (उपवास) पूरी कर लो और अल्लाह का शुक्र अदा करो (जिसके लिय) उसने तुमको हिदायत दी । (क़ुर्आन २, १८५)

अल्लाह अपनी ख़ुशी के लिये हमको रोज़े का हुक्म देता है और हम ऐसा अपनी अध्यात्मिकता का स्तर बढ़ाने के लिये तथा अल्लाह के निकट आने के लिये करते हैं । अल्लाह के मार्गदर्शनों द्वारा हम अपनी दैनिक आदतों को बदलते हैं और हम सीखते हैं कि हम अपनी आदतों के गुलाम नही हैं । बल्कि अल्लाह के गुलाम हैं । अपने आपको अपनी मर्जी से दुनिया की सुख सुविधाओं से एक छोटे समय के लिये अलग करके एक रोज़ेदार अपनी हमदर्दीयां उन लोगो के लिये क़ायम करता है जिनको लगातार भोजन और पानी बग़ैर गुज़ारा करना पड़ता है ।

हज्ज (मक्का का तीर्थ यात्रा)

यदि एक मुसलमान समर्थ है, स्वस्थ है उसके ऊपर क़र्ज का बोझ नहीं है तो अल्लाह ने उसको जीवन में एक बार मक्का की तार्थयात्रा को अनिवार्य किया है। हज की औपचारिकताऐं नबी इब्राहीम के समय से शुरू हुई थीं और मक्का में उन्होंने और उनके परिवार ने जो सकंट सहे थे, उनका भी स्मरण कराती हैं । हज, काबा की यात्रा भी है जो जो अल्लाह का प्रतीकात्मक घर है जिसको मूलतः नबी आदम ने बनाया था ।

हज्ज उस वक़्त है जब सारे विश्व से अलग अलग जगहों भाषाओं, वर्णो के लोग एक विश्वव्यापी बंधुत्व की भावना से एक अल्लाह की इबादत के लिये जमा होते हैं । आदमी केवल सफ़ेद कपड़े के दो टुकड़ों से तन ढकता है जो इनके बीच की ख़ासीयत, तबक़े के फ़र्क़ के एहसास को मिटा देते हैं । अमीर, गरीब, काले गोरे एक दूसरे के करीब मिलकर खड़े होते हैं । अल्लाह की नज़रो में सब बराबर हैं अल्लाह के नज़दीक उनका दर्जा अपने कर्मो के आधार पर है ।

हज्ज एवं ईद-अल-अज़हा जैसे पावन उत्सव की ख़ुशी मनाना अल्लाह की इबादत है और जरूरत मंद लोगो को याद करने का पर्व है । क़ुर्बानी (बलि) का गोश्त जरूरत मंद लोगों में बांटा जाता है और एक अतिरिक्त नमाज़ पढ़ी जाती है ।

''हज्ज के लिये एक महीना निर्धारित है,तो जिस किसी ने हज्ज को अपने उपर फ़र्ज किया (अहराम पहना) तो फिर (उसके लिये) अपनी बीवी से यौन संबंध, गुनाह करने, लड़ाई झगड़ा करने से बचना है, तुम जो नेकी करोगे अल्लाह को उस नेकी की ख़बर है। और अपने साथ सफ़र ख़र्च ले लिया करो और सबसे अच्छा तो अल्लाह का डर है , अल्लाह कहता है ऐ अक़्लमंदों मुझसे डरते रहा करो'' (क़ुर्आन २,१९७)

पैगमबरों (संदेशवाहकों) के वंशवृक्ष

पैग़म्बरों के भेजने का मक़सद (उद्देश्य)

क्या यह ठीक है कि किसी चीज़ को बनाया जाये और उसको बग़ैर किसी कानून और नियम के काम करने की इजाज़त दी जाये और फिर उसको बुला कर नियम तोड़ने की सज़ा दी जाये?

स्वतंत्र इच्छाओं तथा सूझ बूझ की ताक़त के साथ मनुष्य की रचना करने के बाद अल्लाह ने अपनी अपार बुद्धिमता से यह फैसला किया कि इस मानव जाति के मार्गदर्शन (हिदायत) के लिये देवदूतो और संदेशवाहकों (पैग्म्बरो, नबीयों) को भेजा जाये। हर एक नबी को उसके खास लोगों के बीच भेजा गया था जो उनको एक अल्लाह की इबादत की जरूरत और उसके साथ किसी दूसरे को शरीक करने की आदत से दूर रखने की याद दहानी (स्मरण) कराते रहें। यह देवदूत खुदा, उसके बेटे या उसके साथी नहीं थे बल्कि सिर्फ़ मानवजाति के अच्छे मानव थे जो अपनी दीनता, नैतिकता शांतिमयता और अल्लाह, की जानकारी के कारण चुने गये।

अल्लाह ने मानव जाति के पहले दिन से ही नबीयों की एक लम्बी श्रखंला (जंजीर) भेजी। नबी आदम (मानव जाति के दादा) से लेकर अंतिम नबी मुहम्मद तक इस लम्बी ज़ंजीर में इस्राईल की संतानो के नबी और पांच महान पैम्मबर शामिल हैं जो बहुत ही महत्वपूर्ण मार्गदर्शनों के साथ भेजे गये। नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (अल्लाह इन सब पर अपनी दया और शान्ति करे)

नबी, मानवता के लीडर थे जो एक अल्लाह की इबादत का सबक़ (पाठ) देते थे। उनको अच्छी नैतिकताओं तथा मानवधिकारों (इन्सानी हुक़ूक) की जानकारी थी। उन्होंने अपने लोगों को एक साथ रहने की हिदायत की। कुरान कहता है कि हर एक पैग़म्बर ने अपने लोगों से कहा;

''ऐ मेरे लोगों ! अल्लाह की इबादत करो , अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नही है'' (कुर्आन ७, ५९) ''अल्लाह ताला इन्साफ़ का, भलाई का और रिश्तेदारों के साथ अच्छे व्यवहार का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों, नाशायस्ता और जुल्म व ज़्यादती से रोकता है वह खुद तुम को नसीहते दे रहा है कि तुम नसीहत हासिल करो'' (कुर्आन १६, ९०)

इन नबीयों में मुहम्मद अंतिम पैग़म्बर थे जो सम्पूर्ण मानवजाति के लिय 'वह्य' (प्रकाशणा) के पहले दिन से लेकर हमारे वजूद (स्तित्व) के अंतिम दिवस तक के लिये अल्लाह का संदेश लाये। इसी कारण हम देखते हैं कि विश्व के समस्त मुसलमान चाहे वह किसी भी वर्ण और जाति के हों अल्लाह के सभी नबीयों को स्वीकार करते हैं और उनका आदर करते हैं, क्योंकि वे सब ही एक अल्लाह की इबादत के रास्ते पर थे।

नबी
नूह
मानवता के दूसरे पितामह

इस्लाम, ईसाईयों तथा यहूदियों की धार्मिक पवित्र पुस्तकों में नबी नूह तथा बड़ी बाढ़ का वर्णन एक समान मिलता है कुर्आन कहता है कि वे एक पैग्म्बर थे जो ९५० वर्ष जिन्दा रहे। उन्होंने निस्वार्थ भाव से अपना जीवल लोगों में 'अल्लाह एक है' के विश्वास के उपदेश देने में लगा दिया। उनके उपदेशों में था कि मूतियाँ और प्रतिमाओं की इबादत मत करो, कमज़ोर और मजबूर लोगों पर रहम करो। उन्होंने लोगों को ईश्वर की ताकत तथा दया के निशान दिखाये और कृयामत के दिन के महत्वपूर्ण दण्ड की चेतावनी भी दी। लेकिन वे लोग इतने ज़िद्दी थे कि उन्होंने इस चेतावनी को अनसुनी की। अल्लाह ने उनको बाढ़ की शक्ल में महाप्रलय की सज़ा दी और सिर्फ ईमान वालों, जो नबी के बताये हुऐ रास्ते पर चलते थे उन की हिफाज़त की।

कुर्आन में नबी नूह के विषय में एक सूरह (अध्याय) है। कुर्आन के लम्बे अध्यायों में से एक सूरह (अध्याय) में इनकी कथा विस्तार से बयान की गयी है तथा उसमें निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया गया हैः

- उसने उनको अल्लाह की सेवा और अल्लाह के लिये अपने कर्तव्यों के लिये कहा, कि शायद अल्लाह उनको माफ् कर दे।
- उसने उनको रात दिन समझाया पर वे अपने कानो में ऊंगलिया ठूंसे रहे और इन्कार पर अड़े रहे।
- उसने उनसे हमेशा माफ कर देने वाले अल्लाह से माफी मागने को कहा जो उनकी धन और पुत्रों से सहायता करता है और उनकों बाग़ात, नदियां और अच्छी ज़िन्दगी देगा।
- अल्लाह क़ादर मुतलक़ (सर्व शक्तिमान) ने नूह को बातया, इनमें से कोई भी ईमान नहीं लायेगा सिवाय उनके जो पहले ईमान ला चुके है, तो हमारी देखरेख में (आंख के सामने) हमारी हिदायत में जलयान तैयार करो। जब उनके लोग पास से गुज़रते तो उनका मज़ाक़ उड़ाते।
- जब वह जलयान तैयार कर चुके तो अल्लाह ने हुक्मदिया कि इसमें हर प्रकार के जीवों के जोड़े या दो जीव (नर तथा मादा) को चढ़ा लो, अपनी गृहस्ती का सामान और वह लोग जो ईमान वाले हैं इस पर सवार करा लो।
- और यह हुक्म हुआ, ओ जमीन! अपने पानीयों (जल) को निगल ले और ऐ अस्मान! अपने बादलों को खत्म कर दें। और जल ने ज़मीन में समाना शुरू कर दिया और हुक्म की तामील हुई। वैसे ही जलयान नूह और ईमान वालों के साथ अल - जूडी नाम के पहाड़ पर आ टिका और मानवता को नयी शुरूआत का एक और अवसर प्राप्त हुआ।

नबी
इब्राहीम
पैगमबरों के पिता
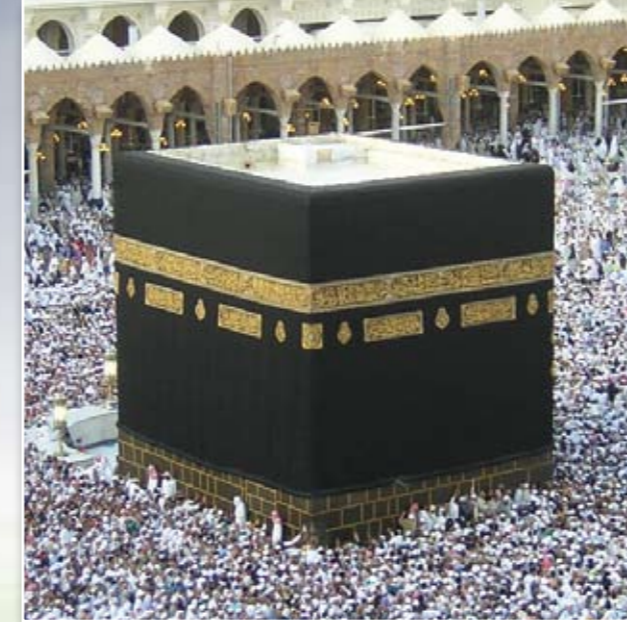
धर्म, नैतिक्ता (अखलाक), सामाजिक जीवन और पितृत्व के इतिहास में नबी इब्राहीम बहुत ही प्रतियाशाली व्यक्तियों में से एक थे। वह वास्तव में नबीयों के पिता हैं क्योंकि अल्लाह क़ादर मुतलक़ (सर्व शक्तिमान) ने आप की संतानों में से बहुत से नबी बनाये जैसे इसहाक, याकूब, दाऊद और उनके बेटों को। और इसके साथ ही आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद के पूर्वज इस्माईल को। (इन सब पर अल्लाह की बरकतें ओर अमन रहे)

कुर्आन में इब्राहीम के विषय में विस्तृत सूरह (अध्याय) है। उनके गौरवपूर्ण कार्यो तथा जीवनी का ज़िक्र कुरान में विभिन्न जगहों पर मौजूद है। खालिक (सृष्टिकरता) के एकत्व की सोच इब्राहीम के दिल में बचपन से ही थी। वह अपने वक्त के मठवासियों के साथ गंभीर वाद विवाद में हिस्सा लेते और उनकी मूर्ति पूजा, सितारों तथा अग्नि पूजा के प्रचलन को गलत साबित करते।

वह एक नबी, एक आदर्श पिता और एक आदर्श पुत्र थे। यहां उनकी ज़िन्दगी की कुछ झल्कियां पेश हैं जो कुरान में बयान की गयीं हैं ?

- इब्राहीम एक ग़ैर - ईमान वाले पिता के फ़रमाबरदार (अज्ञाकारी) पुत्र थे। वह बहुत रहम दिल तथा बहुत सहनशील थे। (कुर्आन १९, ४२ - ४७)
- अल्लाह ने उनको पृथ्वी और आसमानो की बादशाहत दिखायी ताकि वह कामिल (पूरा) यक़ीन रखने वालों में से हो जायें। (कुर्आन ६, ७५)
- उन्होंने अपने लोगों से आसमान में मौजूद चांद, सितारों, सूरज जैसे खुदाओं पर बहस की और ऐलान किया कि इनकी इबादत नहीं कर सकते क्योंकि वे इस लायक नहीं है (कुर्आन ६, ७६, ७९)
- अल्लाह जो सर्व शक्तिमान है, ने इब्राहीम का ज़िक्र एक चुने हुऐ व्यक्ति के रूप में किया है ''और किताब में इब्राहीम की (कथा) याद कर, निसन्देह वह अति सत्यवादी पैगम्बर (ईश दूत) थे'' (कुर्आन १९, ४१)
- अल्लाह ने उनको अक्लमंदी अता की थी और दूसरों को प्रभावित करने की क़ाबलियत प्रदान की थी। '' और वह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को, उनकी समुदाय के ख़िलाफ़ दिया था। हम जिसको चाहते है दर्जों में बढ़ा देते हैं। बेशक आप का रब बड़ा हिकमत (बुद्धिमान) और बड़ा इल्म (ज्ञान) रखने वाला है'' (कुर्आन ६, ८३)

नबी
मूसा
(कलीमुल्लाह)

नबी मूसा एक ऊंचे (बड़े) नबी थे और एक लीडर थे जिन्होंने इस्राईल की संतानों को फराऊन के दमन से आज़ाद कराया। यह न सिर्फ यहूदीयों तथा ईसाईयों बल्कि इस्लाम में इस का ज़िक्र मिलता है। इसकी सूचना तौरात व इंजील (नये व पुराने अहद नामों) में तथा कुर्आन में मिलती है। नबीयों में सब से ज्यादह नबी मूसा का ज़िक्र आता है। कुर्आन में ३४ बाबों (अध्यायों में १३६ बार इनका ज़िक्र है। नबी मुहम्मद के तसदीक मौजूद है।

मूसा का जन्म, इनका मिस्र के राजा फिर्औन के महल में प्रवेश मदियान का सफ़र, नबी चुना जाना, फ़राऊन से इस्राईल की संतानों को बचाने के लिये जाना, फ़राऊन से जंग और इस्राईल की संतानो की मिस्र से हिजरत (कूच या निकलना), देवीय हिदायतों का सिनाई पर्वत पर प्रकट होना, रेगिस्तान की घटनाऐं और उनकी इस्राईल की संतानों के लिये रहनुमाई यह सब कुर्आन में बयान की गयी है।

कुर्आन में ज़िक्र है कि मूसा को तमाम दूसरे लोगों से ऊपर अल्लाह ने एक खास लक्ष्य के लिये चुना था। शब्द जो अल्लाह ने उन से कहे (कुर्आन ७, १४३), यह सच्चाई (तथ्य) कि उनको अल्लाह की तरफ़ की ख़ास मुहब्बत और मक़बूलियत उन पर डाल दी गयी ताकि उनकी परवरिश अल्लाह की आखों के सामने की जायें (कुर्आन २०, ३९); सब इस बात का इशारा करते हैं कि मूसा को अल्लाह ने ख़ास अपनी ज़ात के लिये तैयार किया (कुर्आन २०, ४१)

कुर्आन में मूसा का ज़िक्र एक ऐसे नबी के रूप में है जो मोहम्मद (नबी) के आने की खुशखबरी देता है। वह हम को एक अनपढ़ नबी के आने के बारे में बताते है जिनका ज़िक्र तौरात और इंजील में मौजूद है। (कुर्आन ७, १५७)

इस्लामी रिवायात (हदीसों) में मूसा को (कलीमुल्लाह) कहा जाता है (जिससे अल्लाह ने बातें की) क्योंकि अल्लाह ने सीधे मूसा से बात की और अपनी आयतों (श्लोकों) को उन पर उतारा।

नबी
ईसा
एक महान पैग़म्बर

नबी ईसा इस्लाम के एक ऐसे नबी हैं जिनको इस्राईल की सन्तानों (बनी इस्राईल) की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिये एक नयी धार्मिक पुस्तक इंजील के साथ भेजा गया था। कुर्आन बयान करता है कि मरियम ने ईसा को बगैर किसी पुरुष के छुऐ ही जन्म दिया था। यह एक मोजज़ाती (चम्त्कारिक) शब्द है जो अल्लाह के हुक्म से हुआ। ''(ऐ मुहम्मद) इस किताब में मरियम को याद कर। जबकि वह अपने घर के लोगों से अलग होकर पूर्व दिशा में एक जगह आयीं और उन लोगों की तरफ़ से परदा कर लिया। फिर हमने अपने फ़रिश्ते (जिब्राईल) को उनके पास भेजा और वह उनके सामने पूरा आदमी बन कर ज़ाहिर हुआ। उसने कहा मैं उल्लाह का भेजा हुआ कासिद (संदेशवाहक) हूँ और तुम्हें एक पवित्र पुत्र देने आया हूँ। मरियम कहने लगीं भला मेरे बच्चा कैसे हो सकता है मुझे तो किसी इन्सान का हाथ तक नही लगा और न मैं व्यभिचारी हूँ। जिब्राईल ने कहा बात तो यही है लेकिन तेरे अल्लाह का कहना है कि यह उसके लिय बहुत आसान है। हम तो इसे लोगों के लिय अपनी खास रहमत से एक निशान बना देंगे। यह तो एक पूर्व निश्चित बात है'' (कुर्आन १९, १६-२१)

उनके लक्ष्य में मदद के लिये ईसा को अल्लाह की इजाज़त से मोजज़े (चमत्कार) करने की योग्यता दी गयी थी। इस्लामी मूल-पाठो (किताबों)के अनुसार ईसा ने तो मृत्यु को प्राप्त हुऐ और न ही उन को सूली (शूली) पर चढ़ाया गया। इस्लामी रवायात (धर्म ग्रन्थों/हदीसों) के अनुसार वह क़यामत के दिन के करीब इंसाफ और ईसाई विरोधियों को हराने के लिए पृथ्वी पर लौटेंगे।

इस्लाम में दूसरे पैगम्बरों की तरह ईसा को मुसलमान माना गया है जैसा कि उन्होने लोगों को अल्लाह की मर्जी पर चलने का सीधा रास्ता दिखाया (उपदेश दिया)। इस्लाम ईसा को ईश्वर या ईश्वर का बेटा नहीं मानता है। बल्कि कहता है कि ईसा एक आम (सामान्य) मनुष्य थे जो दुसरे नबीयों की तरह अल्लाह की निर्देश लोगों तक पहुँचाने के लिये दिव्य शक्ति द्वारा चयन किये गये।

इस्लामी मूल -पाठ ईश्वर (अल्लाह) के साथ किसी को शरीक करने से रोकती है और अल्लाह के अकेले पूज्य होने पर जोर देती है। कुर्आन में ईसा के अनेकों लक़ब (पदवियां) दी गयी हैं जैसे अल-मसीह लेकिन इसका वह अर्थ नहीं जिसमें ईसाई आस्था के अनुसार उनको अल्लाह का पुत्र कहा गया है। इस्लाम में ईसा को मुहमम्द से पहले आने वाला नबी कहा जाता है और मुसलमानों का ऐसा विश्वास है कि यह मुसलमानों को मुहम्मद के आने की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) थी।

नबी

मुहम्मद

पैग़म्बरों पर मुहरबंद

इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मक्का में वर्ष ५७०ब्क में पैदा हुऐ थे। उनकी एक यतीम की तरह उनके चाचा ने पालन पोषण की जो एक आदरणीय कबीले कुरैश से संबंध रखते थे। जैसे जैसे वह बड़े हुऐ अपनी सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, उदारता के लिए मशहुर हुऐ। यहां तक कि लोग उनको 'ईमानदार' के नाम से पुकारने लगे। मुहम्मद निहायत पाक इंसान थे उन्होने लम्बे समय तक अपने समाज मे मुर्तिपूजा जैसे घृणित कार्य तथा समाज की गिरावट का समय देखा। मुहम्द ने अपनी ४० वर्ष की आयु में अल्लाह से जिब्राईल के द्वारा पहला देवीयज्ञान (वह्य) प्राप्त किया। अल्लाह के शब्दों का अवतरित २३ वर्षो तक और इस का संकलित रूप कुर्आन कहलाता है। जैसे ही उन्होने कुर्आन को ज़बानी सुनाना शुरू किया और लोगों को अल्लाह के द्वारा उतारे गये सत्य का निर्देशन देना शुरू किया, वह और उनके मानने वालों के छोटे समूह पर उनके चारों तरफ मौजूद समाज ने मुसीबतें ढाना शुरू कर दिया। यह मुसीबतें इतनी सख्त और ज्यादह होती गयीं कि वर्ष ६२२ ब्क में अल्लाह ने उनको मदीना चले जाने (हिजरत) का आदेश दिया।

कई वर्ष बाद मुहम्मद और उनके अनुयायी मक्का लौटे जहां उन्होने अपने उन दुश्मनों को माफ़ कर दिया जो उनको बेरहमी से सताते थे। उनकी मृत्यू से पूर्व ६३ वर्ष की आयु तक अरब प्रायद्वीप का एक बड़ा हिस्सा मुसलमान हो चुका था। और उनकी मृत्यू के मात्र एक शताब्दी में इस्लाम का विस्तार स्पेन, पश्चिम और सुदूर पूर्व चीन तक हो गया। इस्लाम के सिद्धान्तों की सच्चाई और पाकी इसके पुरअमन (शांतिमय) और तेज़ (तीव्र) विस्तार के मुख्य कारण हैं।

नबी मुहम्मद ईमानदारी, न्याय, दया, संवेदनशीलता, सच्चाई और बहादुरी की संपूर्ण उदाहरण थे। हालांकि वह एक इंसान थे लेकिन उनको शैतानी कुकृतियों से दूर रखा गया था, उन्होने केवल अल्लाह की प्रसन्नता और आख़िरत (प्रलोक) के लिये काम किया। इसके अलावा अपने कर्मों और व्यवहार में वह हमेशा सतर्क और सावधान थे और अल्लाह से डरते थे।

''ऐ लोगों'' तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्य लेकर तुम्हारा रसूल (सन्देशवाहक) आ गया है। इसलिये तुम ईमान लाओ ताकि तुम्हारा भला हो और अगर तुम ने कुफ़्र किया (गैर मुस्लिम बने रहे) तो बेशक अल्लाह ही का वह सब कुछ है जो आसमानों और जमीन में है और अल्लाह हिकमत वाला व अकलमंद है।'' (कुर्आन ४,१७०)
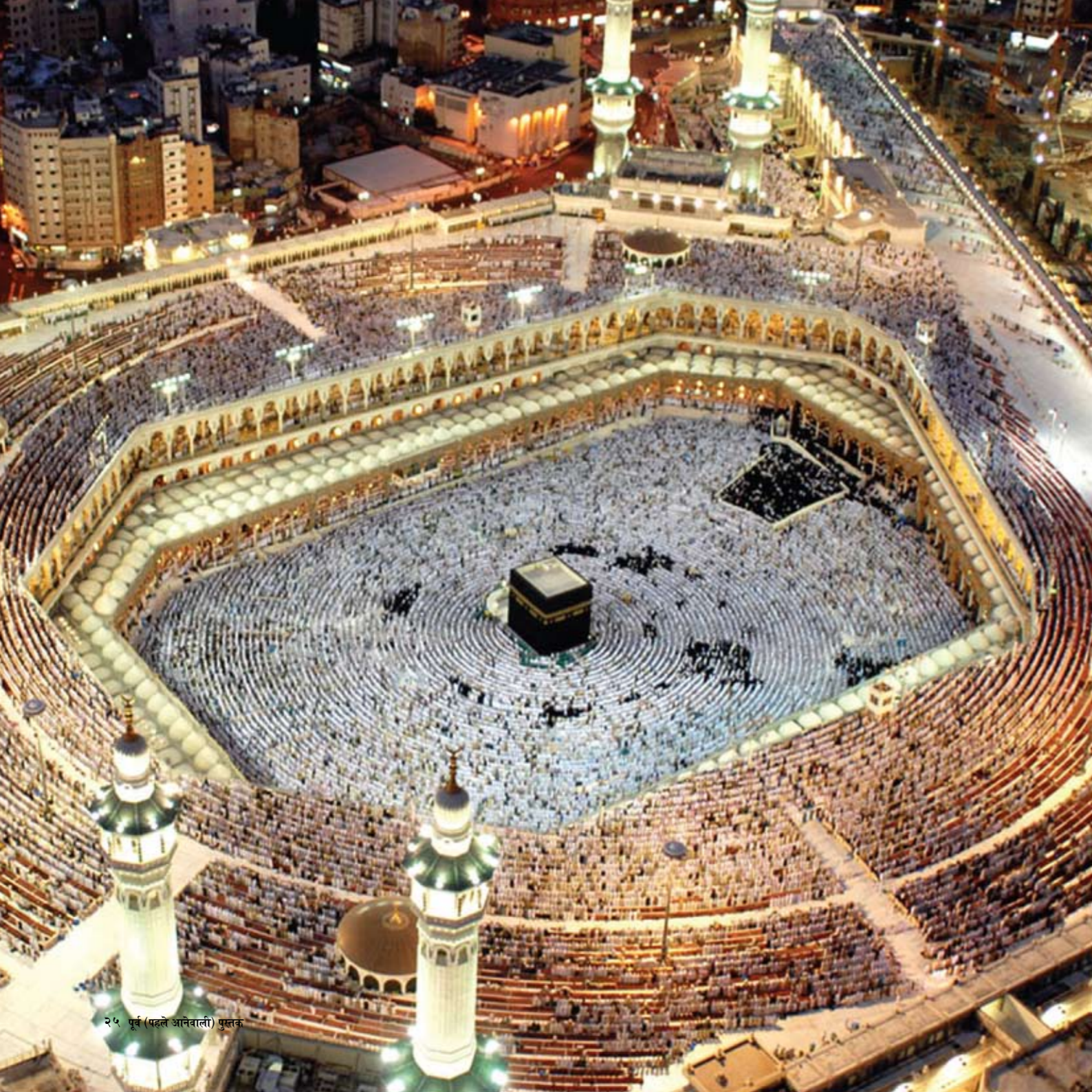
पूर्व (पहले आनेवाली) पुस्तक

हर समय अल्लाह ने मानव जाति (इंसानो) की हिदायत (मार्गदर्शन)के लिये नबीयों को भेजा कि वह इंसानो को सिर्फ उसकी (अल्लाह) की इबादत की हिदायत दें। शुरू से आखिर तक नबी आदम से लेकर नबी मुहम्मद तक संदेश एक ही था। पाँच मुख्य नबीयों को ईश्वरीय ज्ञान के साथ पैदा किया गया जिस की मदद से उनको लोगों को हिदायत देना थी, यह सब कुछ किताबों की शक्ल मे था। इन सब किताबों को, (सिवाय कुर्आन के) इंसानो ने बदल डाला केवल कुर्आन ऐसा है जिस में न तो आज तक कोई बदलाव हआ है और न ही यह किसी नये रूप में सामने आया है।

पूर्व पूस्तकें इब्राहिम को (नामावलीयां तथा तख़्लियां), मुसा को (तौरात और तख़्लियां): दाऊद को (जबूर), ईसा को (बाईबिल) और मुहम्मद को (कुर्आन)भेजी गयी। कुछ और पवित्र पुस्तकें भी दूसरे नबीयों पर उतारी गयीं। लेकिन कुर्आन में उनका जिक्र नहीं है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बयान अनुसार नबीयों की संख्या हजारों में है लेकिन इन सब में केवल २५ महान नबीयों का जिक्र कुर्आन में मिलता है। इनमें कुछ नबी पवित्र पुस्तकों के साथ तथा कुछ नबी बगैर पुस्तकों के भेजे गये। इन सभी पुस्तकों को अल्लाह की ओर से औतरण मानने का कुर्आन में आदेश है प्रंतु कुर्आन के अतिरिक्त कोई भी पुस्तक मानवीय हेर फेर से सुरक्षित नहीं रह सकी। यह सब (रसूल) अल्लाह, उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों (पैग़म्बरों) पर ईमान लाये, उसके रसूलों में से हम किसी में अंतर नहीं करते'' (कुर्आन २,२८५)

कुर्आन पाक

''... यह किताब हम ने आप (मुहम्मद)की तरफ उतारी है कि आप, लोगों को उनके प्रभु के हुक्म से अंधेरों से उजाले की तरफ़ लायें, ज़बरदस्त और तारीफों वाले अल्लाह की राह की तरफ''(कुर्आन १४,१)

कुर्आन दुसरी किताबों से भिन्न है क्यों कि यह पूरी तरह अल्लाह के दिये हुए शब्दों से लिखा गया है। यह किताब अल्लाह के फरिश्ते जिब्राईल के द्वारा पैग़म्बर मुहम्मद को भेजी गयी। लगभग २३ वर्षो के अंत्राल में पूरी हुई। इसकी शुरूआत ६११ ईसवी में हुई। मुहम्मद अनपढ़ थे पर जिब्राईल ने उनको तीन बार पढ़ने का हुक्म दिया,

''अपने अल्लाह का नाम लेकर पढ़, जिसने तुम्हारी रचना की, जिसने इन्सान को (केवल) खून के लोथड़े से पैदा किया, तू पढ़ता रह तेरा अल्लाह बड़ा करम वाला है जिसने कलम के ज़रिये इल्म सिखाया, जिस ने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नही जानता था'' (कुर्आन ९६, १-५) कुर्आन, मुहम्मद के साथ रहने वालों द्वारा लिखा गया था। उन लोगों ने इसको ज़बानी याद (हिफ्ज़) कर लिया था। कुर्आन में ११४ सूरह (अध्याय) हैं जिन को अल्लाह के हुक्म से जिब्राईल ने क्रमबंध किया।

मुसलमान की नज़र में कुर्आन अल्लाह के दिये हुऐ अल्फ़ाजों का नाम है जिनको बदला नहीं जा सकता। अल्लाह ने इसको सीधे इन्सानियत के हवाले किया है यह अल्लाह का शब्द है इसलिये इसको झुठलाया नहीं जा सकता। कुर्आन बुनियादी तौर पर एक मार्गदर्शक (हिदायत करने वाला) है जो जीवन के मक़सद (उददेश) का मार्गदर्शन करनेवाला है और इसको उस अल्लाह ही ने भेजा है जिसने जीवन दिया है। इसके पढ़ने वाले को कुर्आन बताता है कि हम अपने आप से अपने खानदान से और अपने समाज से कैसा सुलूक (व्यवहार) करें। कुर्आन यकीन, रब के साथ रिश्ते, अख़लाक (आचरण) और मुल्कों का एक दूसरे के ासथ कैसा सुलूक हो, की शिक्षा देता है। यह इससे पहले आने वाले पैग़म्बरों, पवित्र पुस्तकों, कयामत के दिन और जो न दिखायी दे, के बारे में बताती हैं यह ब्रहमाण्ड, जीवों तथा माहौल के साथ व्यवहार की हिदायतों का बयान करती है।

कुर्आन, औरतों, बच्चो, दीनदार लोगों औरा ऐसे लोगों के लिय जिन्होंने आखरी पैगाम को कबूल करने से इंकार किया इन सब के लिये वाजेह (साफ) तौर पर इन्सानी हुकुक (मानवधिकारों) को यकीनी बनाया है। यह किताब जरूरतमंदों , पशुओं, मुल्कों की तारीख (इतिहास), शुभ अशुभ, साईंसी निशानात के बारे में बतायी है।

अल्लाह के सच्चे शब्दों को महफुज (सुरक्षित) रखने के लिय कुर्आन को इबादत के लिये हमेशा अरबी भाष में पढ़ना चाहिये क्योंकि शब्दों के सच्चे अर्थ सिर्फ अरबी भाषा में ही मिल सकते है। फिर भी दूसरी भाषाओं में मायनों का खुलासा किया गया है। लेकिन वे कुर्आन नही है। बल्कि कुछ संदशों को बयान करेन की कोशिश भर है।

मक्का की पुण्य मस्जिद

इस्लाम में मुसलमानो को तीन पवित्र स्थानों की यात्रा करने की ताकीद की गयी है । मक्का की पावन पुण्य मस्जिद ‘‘’हरमैन’ मदीना में ‘मस्जिदे नबवी’ तथा येरूशलम की अल अक्सा मस्जिद । इन मस्जिदों की विशेषताऐं नबी मुहम्मद के निम्नलिखित प्रवचनों (खुतबों) में उल्लेखित है:

‘‘तीन मस्जिदों की यात्रा का इरादा कीजीये : (अल मदीना में) मेरी- मस्जिद के लिये, (मक्का) की पुण्य मस्जिद, तथा (येरूशलम) की अल - अक्सा मस्जिद’’ (बुखारी तथा मुस्लिम से)

‘‘मक्का की पुण्य मस्जिद में एक वक्त की नमाज़ पढ़ना अन्य मस्जिदों में पढ़ी गयी एक लाख नमाजों के मूल्य के बराबर होती है। मेरी मस्जिद में यह एक हजार नमाजों के बराबर तथा येरूशलम की अल - अक्सा मस्जिद में पढी गयी नमाज़ पांचसो नमाजों के बराबर होती है’’(बुखारी से)

‘‘बक्का (मक्का) मानव जाति की प्रार्थना (इबादत) के लिय निश्चित किया गया सबसे पहला घर है, जो हर प्रकार के जीवों के मार्गदर्शन तथा बरकतों (आशिर्वादो) से भरा हुआ है। ’’ (कुर्आन ३,९६)

मक्का की पवित्र मस्जिद काबा के चारों और बनायी गयी, इस प्रथमतम ग्रह की एकमेव एंव सत्य ईश्वर की प्रार्थना के लिय पवित्र घोषणा की गयी। काबा पत्थरों का एक चौकोर (घनाकार) ग्रह है जो अन्दर से पूरी तरह खाली है। काबा हज़रत आदम द्वारा रखी गयी मूल नीव पर नबी इब्राहिम व उनके पुत्र नबी इस्माईल ने खड़ा किया। काबा के पूर्वी कोने पर एक काला पत्थर है जो अल-हजर अल-असवद कहलाता है। हज़रत इब्राहिम व उनके बेटे द्वारा बनायी गयी असली इमारत का सिर्फ़ यह पत्थर ही बाक़ी बचा है। काबा एक दिशा है। मुसलमान अपनी नमाज़ के लिय इस ओर मुंह करके खड़े होते है। काबा और ना ही काला पत्थर पूजा की चीज़े हैं बल्कि यह एक केन्द्र बिन्दु का काम करता है जो मुसलमानों को प्रार्थना में एकीकार करता है।‘‘अल्लाह को काबा और उसके चारों ओर की तमाम चीजों से ज्यादह एक मुसलमान का रक्त (जीवन) प्रिय है’’(सही से)

अल-मदीना की मस्जिदे नबवी

इस्लाम में प्रथम मस्जिद मदीना में नबी मुहम्मद द्व ारा वर्षे ६२२ब्र में बनायी गयी थी। यह एक बहुत साधारण रचना थी ।जोकि कच्ची ईटों तथा पत्थरों से बनी हुई थी। मस्जिद के करीब नबी मुहमम्द का साधारण सा घर था जिसमें बाद में नबी मुहम्मद तथा उनके दो साथियों, अबु - बक्र अस-सिद्धिक तथा उमर इब्न अल-ख़ताब को दफ़नाया गया था।

इसके निरन्तर विस्तार ने सोर इतिहास में नबी की इस मस्जिद का आज एक श्रेष्ठ एंव भव्य (आलीशान) वास्तुकलात्मक कृति (रचना) बना दिया है। इस मस्जिद के करीब एक सुन्दर हरे रंग का गुबंद है जिसके नीचे नबी मुहम्मद की समाधि को देखा जा सकता है। इस मस्जिद के आश्चर्यचकित कर देनेवाली आकृतियों में २ किलोमीटर लम्बाई की अरबी सुलेख की नक़्क़ाशी की श्रेष्ठकृति, ८० टन वज़न के सरकने वाले गुंबद तथा आगन में मस्जिद की छत के बराबर की छतरियां है जो मौसम की दशानुसार खोली तथा बंद की जा सकती है।

अल-अक़्सा मस्जिद

''पवित्र है वह जिसने अपने गुलाम (नबी मुहम्मद) को रात मे अल-मस्जिद अल -हरम से अल-मस्जिद अल-अक़्सा अपने निशानों को दिखाने ले गया जिसके चारों तरफ़ उसने बरकतें रख दीं। बेशक वह सुनने और देखने वाला है'' (कुर्आन १७,१)

येरूशलम शहर की अल-अक्सा मस्जिद इस्लाम का तीसरा अतिपुण्य स्थल है। यह मुसलमानों के दिलों को बहुत प्रिय है जैसा कि काबा बनने से पहले यह पहली मस्जिद थी जिसमें वे प्रार्थना (नमाज़) के लिये गये। यह इसलिये भी कि नबी मुहम्मद को इस मस्जिद में रात्री का सफर (इस्रा व मेराज) के लिये ले जाया गया था और यह वह स्थान है जहां उन्होंने इबादत में समस्त नबीयों की अगुवाई की भी।

अल-अक्सा मस्जिद मुक्कम्मल आदरणीय पुण्य स्थल है, जिसमें ना केवल हज़रत उमर की मस्जिद शामिल है बल्कि पत्थर की शिलाओं का गुबंद और पत्थर के बाड़े के अन्दर २०० से अधिक महत्वपूर्ण चिन्ह एवं स्थान स्थित है। इसका क्षेत्र लगभग १,४४,००० वर्ग मीटर है इसी लिये यह येरूशमल के प्राचीन नगर के १/६ वें भाग पर फैली हुई है। इस चहारदीवारी से घिरे हुऐ पुण्य स्थान पर नमाज़ पढ़ने का सवाब (लाभ) किसी आम मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के सवाब (लाभ) से ५०० गुणा ज्यादह होता है।

कुर्आन के मोजज़े (चम्तकार)

जब एक किताब भ्रुण (जनीन) के भ्रुणीय विकास (जनीनयात) के बारे में बताती है, बादलों और बारिश के बनने के बारे में बताती है, समुद्रों और उनकी सतह से मीलों नीचे उनके गुणों और विशेषताओं के बारे में बताती है और यह सब कुछ इंसान के सुक्ष्मदर्शी, जहाज़ या पनडुब्बी का अवष्किार किये बग़ैर, तो पढ़ने वाले के दिमाग़ में कुछ सवाल जरूर पैदा होना चाहिये। कुर्आन का अवतरण तक़रीबन १४०० साल पहले अरबी मरूस्थल के बीच एक मनुष्य पर हुआ। एक ऐसे मनुष्य पर जो न तो पढ़ सकता था और न लिख सकता था। यह सब कुर्आन की चम्तकारिक प्रकृति के बारे में किस तरह के सवालात उठाते हैं ?

हम आज विज्ञान और आधुनिक तकनीक के युग में लगातार नई हक़ीकतों (तथ्यों) और आयामों के बारे में सीख रहे है। केवल एक मिनट का वक़्त सोचने के लिये लीजिये कि धर्म (शरियत) ने हमारे चारों ओर के समाज को समझने में क्या किरदार (भूमिका) अदा किया है तो आप को यह जान कर ताज्जुब होगा कि हमने कुर्आन से क्या क्या जानकारी हासिल की है।

भ्रुण (जनीन)

नशोनुमा (विकास) की शुरूआती अवस्थाओं से कुर्आन भ्रुण (जनीन) के विकास की सही सही अक्कासी (चित्रण) करता है। पहले यह एक बूंद की हालत में होता है इसको ''नुत्फ़ा'' कहते है। यह एक शुक्राणू (नर बीजाणू) और एक अण्डाणू (मादा बीजाणू) के मिलने से बनता है। यह युग्मनज है और एक बूंद की शक्ल का होने की वजह से 'नुत्फ़ा' कहलाता है। इसके बाद की हालत को ''अलक़ह'' कहते है अरबी भाषा में इसके तीन अर्थ है, जोंक, लटकती चीज़ और रक्त का थक्का।

भ्रुण न सिर्फ़ जोंक से मिलता और जुलता होता है बल्कि यह मां के ख़ून से जोकं की तरह खाना हासिल करता है। जैसे जैसे यह बढ़ता है मां के पेट से अपने आप को जोड़ लेता है जैसे कि यह पेट में लटक रहा हो, और अलक़ह की अंतिम अवस्था वह है कि जनीन मां का बहुत सा ख़ून अपने अंदर ले लेता है लेकिन यह ख़ून उसके अंदर की रगों में दौड़ना शुरू नहीं करता है और एक थक्के की तरह दिखायी देता है।

इसके बाद की हालत को 'मुदगह' कहलाती है। अरबी भाषा में इसका अर्थ है चबाया हुआ। भ्रुण (जनीन) की बढ़ती हुई रीढ़ की हडड्री एक दांतो द्वारा चबायी हुई चीज़ से मिलती जुलती होती है। इसके बाद की अवस्था ''इज़ाम'' या हडिड्यों का बनना कहलात है। कुर्आन में इसके बाद की अवस्था हड्डियों के चारों तरफ मांस (गोश्त) के बनने ओर गोश्त के जरिये हड्डियों को ढ़क लेने का बयान बिल्कुल सही सही दर्ज है।

कर्आन में भ्रुणीय विकास (जनीनयात) का रहस्योदघाटन १४०० वर्ष पूर्व कर दिया था। आधुनिक विज्ञान ने इस की खोज सुक्ष्मदर्शी के अविष्कार के बाद पिछले कुछ दशकों पूर्व १७ वीं शताब्दी में की। ऐसा माना जाता है कि शुक्राणू में मनुष्य का लघु-रूप छुपा है।

''यक़ीनन हमने इंसान को मिट्टी के निचोड़ से बनाया और फिर हमने इसको शुक्राणू में स्थापित करके हिफ़ाज़त की जगह रखा - एक बूंद को एक पक्की जगह (गर्भश्य) में रखा, फिर हमने इेस जमा हुआ खून बना दिया। फिर इस थक्के से मास (गोश्त का लोथड़ा) बनाया, फिर गोश्त के टुकड़े में हड्डियां पैदा की, फिर हड्डियों को मांस पहना दिया, तब हमने नये सृजन का विकास किया। अल्लाह बड़ा पाक बरकतों वाला तथा अच्छा ख़ालिक़ (सृष्टिकरता) है। (कुर्आन २३, १२-१४)

फिरऔन का डूबना

सन्देष्टा मूसा के कालमे फिरऔन एक बड़ी शक्ति था जिसने अल्लाह के होने पर विश्वास करने को अस्वीकार किया था। वह जिद्दी और अभिमानी था और अपना जीवन सन्देष्टा के जीवन को त्रासित करने में ब्यतीत किया था। वह डूब जाएगा कहकर मूसाने उसको सावधान किया फिरभी उसने विश्वास करना स्वीकार नहीं किया। जब मृत्यु निश्चित तौरपर उसके सामने आ खडी हुइ तभी उसने अल्लाह पर विश्वास की घोषण किया।

‘‘ तथा हमने इस्राइल की सन्तान को समुद्र से पार कर दिया। फिर उनके पीछे -पीछे फिरऔन सेना के साथ अत्याचार तथा क्रूरता के उद्देश्य से चला , यहाँ तक कि जब डूबने लगा , तो कहने लगा , मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राईल की सन्तान ईमान लायी हैं , कोइ उसके सिवाय पूजने योग्य नहीं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।

; उत्तर दिया गया किद्ध अब ईमान लाता है ? तथा पहले अवज्ञा करता रहा तथा भ्रष्टाचारियों में सम्मिलित रहा। तो आज तेरे शव को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए शिक्षा का चिन्ह हो जाये जो तेरे पश्चात हैं। तथा वस्तूतः अधिकाँश हमारे प्रमाण -चिन्हों से विमुख हैं ’’। ; कुर्आन : १० : ९०- ९२ द्ध

पहाड़ों के बारे में

पहाड़ों की जड़ें खूटियों की तरह है जो जमीन की सतह को मज़बूती से पकड़े रहती हैं और इसको स्थिरता प्रदान करती है।

जब खे़मे (तम्बू) बनाने में खूटियों और रस्सियों तथा दूसरे सामानों का प्रयोग खे़मे को खड़ा करने के लिये किया जाता है तो आप ने देखा होगा कि खूंटियां जमीन में धंस कर गायब हो जाती है। केवल कुछ भाग ही ज़मीन के ऊपर बाकी रहता है। यह वह तकनीक है जो खे़ंमे को सहारा देने व उसको गिरने से बचाने के लिय प्रयोग होती है। कुर्आन ने पहाड़ों को खूंटियो की तरह बयान किया है। इस सिद्धान्त का परिचय सर जार्ज ऐरी (प्ळम्व्त्ळम ।प्त्ल) ने मात्र १८६५ में दिया। भू-विज्ञान में आधुनिक प्रगति यह स्पष्ट करती है कि पहाड़ों की सतह पर स्थिरता से कायम रखती है। अल्लाह कुरान में फ़रमाता है।,

‘‘क्या हमने जमीन को आराम करने का फर्श नही बनाया और पहाड़ों को मेखे़ (खूंटियां) नही बनाया ’’(कुर्आन ७८, ६-७)

‘‘और उसने ज़मीन में पहाडों को गाड़ दिया है ताकि तुम्हे हिला न दें और (रचना की) नहरों और रास्तों को बना दिया ताकि तुम अपनी मंज़िल को पहुंचो’’ (कुर्आन १६,१५)

समुद्रों के बारे में कुर्आन

जहां दो समुदंर मिलते है वहां एक कुदरती ओट (हिजाब) मौजुद है। साईसदानो ने हाल मे ही साबित किया है कि जहाँ पानी के दो वजूद एक दूसरे के क़रीब आते हैं वहां इन्सानी आँख को न दिखाई देनेवाली एक रूकावट (पर्दा या ओट) मौजूद होती है जो इन पानीयों की नमकीनीयत, हरारत, घनत्व को बरक़रार (बाक़ी) रखता है और इनमें किसी को एक दुसरे में समाने (घुसने) से रोकता है। इस बात को भुमध्य सागर और अटलांटिक महासागरों के एक दूसरे के मिलने की जगह पर देख परखा जा सकता है। जहां मीठ पानी खारी कड़वे पानी से मिलता है।

इस पर्दे या रूकावट का बयान कुर्आन में १४०० साल पहले ही कियाजा चुका है,

‘‘’उसने दो दरिया जारी कर दिये, जो एक दूसरे के करीब होते हुऐ भी एक अवरोध की मदद से अपनी अपनी सीमाओं में रहते हुये बह रहे है ’’ (कुर्आन ५५, १९-२०)

‘‘और वही है जिसने दो दरिया आपस में मिला रखे हैं यह है मीठा और मजे़दार और यह है खरी कड़वा और इन दोनो के बची एक हिजाब और मज़बूत ओट कर दी है’’ (कुरान २५,५३)

और मजे़दार बात यह कि ख़लीज (खाड़ी) में पर्ल डाईवर्स (च्मंतस . क्पअमते) को इस कुदर्ती मज़हर (दर्शक - सूचक) के लिये जाना गया। अरब खाड़ी के खारी पानी में समुद्री सतह से लगभग चार से ६ः मीटर नीचे मीठे पानी की सरिताऐं पायी जाती है। लम्बे महीनों के दौरान पर्ल-डाईवस्र समंदर में इन सरिताओ की अधिकता होती है जहां यह अपने मीठे पानी के जख़ीरे (भण्डार) को बढ़ने के लिये डुबकियां लगाती है। इनमें की एक मशहूर सरिता सऊदी अरब के जुबेल शहर के उत्तर पूर्व में एन-इग़मीसा (।प्छ . फळभ्प्ैप्।) के नाम से मशहूर है।

बादलों के बारे में कुर्आन

बादलों के नवीनतम अध्यन के बाद वैज्ञानिकों का अनुमान है कि बादलों का बनना और शक्ल अख्त़ियार करना एक ख़ास उसून के तहत होता है। इसकी एक मिसाल कपासी बादलों का बनना और यह किस तरह बारिश करते है, ओले बरसाते और बिजलियाँ कड़काते है, यह सब निम्नलिखित चरणों में होता है छोटे छोटे कपासी बादल हवा के द्वारा एक जगह जमा किये जाते है। जहां वे एक दूसरे से जुड़ जाते है और एग बड़ा कपसि बादल बनाते हैं फिर वे एक दूसरे

के उपर जमा होते है और उनका आकार ऊचाई में बढ़ता जाता है बादलों में फैलाव ठंडे वायु मण्डल में होता है। जल की बारीक बूदों व बारीक बर्फ बनता है जब इनक वज़न की मिक़दार (मात्रा) एक ख़ास बिन्दू पर पहुँचती है तो यह ज़मीन पर गिरने लगती है।

‘‘.........और वह आस्मानों से (बादलों) के पहाड़ नीचे भेजता है जिसमें बर्फ़ के तूफ़ान है (ओले) फिर वह जिस पर चाहे इन्हे बरसाये और जिनसे चाहे इन्हे हटा ले। बादल ही से निकलने वाली बिजली की चमक ऐसी होती है कि लगता है अब आँखो की रोशनी ले चली’’(कुर्आन २४,४३)

कुर्आन का भाषिक चमत्कार

कुर्आन पाक ऐसे समय में उतारा गया जब लोग कविताओं और शब्दों का प्रयोग अपने सुनने वालों को चकाचौंध कर देने के लिये करते थे, फलस्वरूप लोगों के बीच प्रतिस्प्रधा शुरू हो गया और अरबी भाषा में उच्च श्रेणी मधुर वक्तव्य का प्रचलन हुआ।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'वह्य' (प्रकाशणा) पाने से पहले अपनी जिन्दगी के चालीस सालों तक अरब के कवियों से दूर रहे, लेकिन वे शब्द जो उन पर अल्लाह की तरफ़ से उतारे गये और जो उनके साथियों द्वारा आगे बढ़ाये गये वह बहुत अच्छे, बहुत शालीन और अति सन्तुलित थे जो लोगों ने पहले कभी नहीं सुना था।

जो कुर्आन के ईश्वरीय होने पर शंका करते हैं अल्लाह ने उनके लिये एक चुनौती रखी है कि वे कुर्आन के अध्यायों जैसा एक अध्याय तैयार करके दिखायें जो कुर्आन के अध्याय जैसी सुन्दरता, मधुर्ता, शालीनता, तत्वदर्शिता, सत्य ज्ञान, सत्य भविष्यवाणी और दूसरी पूर्ण विशेषताएँ रखनेवाला हो। तब से लेकर आज तक किसी ने भी इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया। अल्लाह कुर्आन मे फ़रमाता है, ''क्या यह लोग कुर्आन में मनन नही करते ? अगर यह अल्लाह के अलावा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें निश्चित रूप से बहुत भिन्नता पाते'', (कुर्आन ४,८२)

''हम ने जो कुछ अपने बंदे (नवी मुहम्मद) पर उतारा है (कुर्आन) इसमें अगर तुम को शक हो और तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूरत (अध्याय) तो बना लाओ, तुम को छुट है अल्लाह के अलावा तुम अपने मददगारों को भी बुला लो, लेकिन अगर ऐसा नहीं किया और तुम ऐसा कदापि कर भी नहीं सकते तो (इसको सच्चा मानकर) उस आग से डरो.....।''(कुर्आन २,२३-२५)

''और जब कुर्आन पढ़ा जाया करे तो इसे ध्यानपुर्वक सुनो और चुप रहा करो सम्भवतः तुम पर दया हो।'' (कुर्आन ७,२०४)

''यह मंगलमय पुस्तक है जिसे हमने आप की ओर इस लिये अवतरित किया है कि लोग इस की आयतों में चिन्तन मनन करें तथा बुद्धिमान इस से शिक्षा ग्रहण करें। ''(कुर्आन ३८,२९)

दिमाग़ के अग्रिम भाग के बारे में

यह जानना दिलचस्प है कि दिमाग़ के विभिन्न भागों के काम करने के तरीकों की खोज वैज्ञानिकों ने सन् १९३० मे शुरू की। दिमाग़ का एक हिस्सा जो सामने की तरफ स्थित है (च्म्.थ्व्छजा ए ब्व्ज्म) कहलाता है। वैज्ञानिकों ने खोज की है कि यह भाग अच्छे और बुरे व्यवहार की योजना बनाता और सच व झूठ बोलने जैसे कामों को करता है। अल्लाह ने यह सब बताने के लिये हमारा चयन १४०० वर्ष पहले किया।

नीचे की आयत में अल्लाह हम को ख़बरदार करता है कि वह इन्सान को उसके सर के अग्रिम भाग अर्थात पेशानी पकड़ कर उठायेगा,

''निसन्देह यदि यह नहीं रूका तो हम उसके ललाट के बाल पकड कर घसीटेंगें। ऐसा ललाट जो झूठा तथा पापी है'' (कुर्आन ९६, १५-१६)
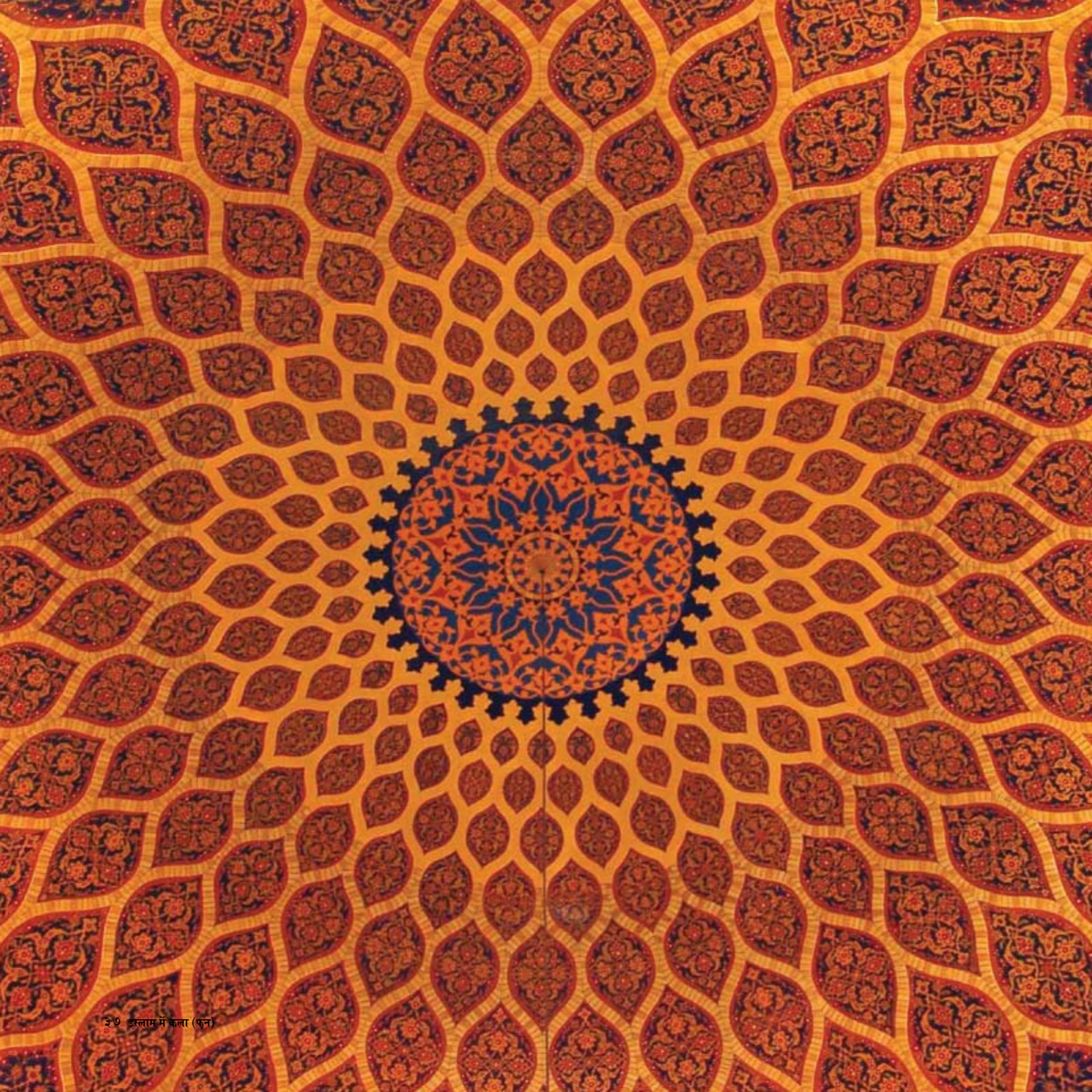
इस्लाम में कला (फ़न)

''अल्लाह सुन्दर है और सुन्दरता को पसंद करता है।'' यह अल्फ़ाज़ नबी मुहम्मद ने १४०० सौ साल पहले कहे थे। उन्होंने यह भी कहा था ''' जब तुम कुछ अच्छा करते हो तो अल्लाह इसको पसंद करता है '' (मुस्लिम से बयान)

नाबीयों के इस कथन ने मुसलमानों को उनकी इबादत की जगहों, घरों और जीवन में हर रोज इस्तेमाल की चीजों को संवारने, उनको खूबसूरत बनाने और सजाने का उत्साह पैदा किया। इस्लामी फ़न-ए- तामीर (वास्तुकला) और सजाने की कला आज भी अच्छी तरह जिन्दा है और दुनिया के बहुत से मुस्लिम हिस्सों में इसकी क़दर की जाती है।

मुस्लिम कला ने शुरू से ही दुनिया का एक दिलकशन मुतावाज़िन (नपा तुला) नज़रिया पेश किया है। इस्लामी कला ने कई शुरूआती रचनाओं जैसे ज्यामितिय, अराबस्क, फुल पंक्तियां और खुशनवीसी (सुलेख) जो सब आपस में गूंथ दी गयीं के प्रयोग करने का अनोठा तरीका अविष्कार किया है।

''मुसलमान हर चीज़ के वजूद में तवाजुन और हम-आहंगी (मेल) का क़ायल है (मानता है)। कोई चीज़ यूँ ही अचानक नहीं पैदा होती। सब कुछ एक बुद्धिमान औ रहम दिल आयोजक (मनसूबा साज़)(मनसूबा बनानेवाला) के मनसूबे (योजना) का हिस्सा है। इस्लामी कला की कुछ ज़रूरी चीज़े हैं।

- इस्लामी कला चीज़ो के सार व अर्थ की अक्कासी को तलाश करती है।
- दस्तकारी और सजावट के कामों को कला के स्तर तक उठाया।
- खुशनवीसी (सुलेख) इस्लामी कला का एक बड़ा हिस्सा है।
- फुल पक्तियों और ज्यामितिय आकृतियों को एक दूसरे में मिलाने की कला में इस्लामी कलाने एक ख़ास किरदार निभाया है।
- इस्लामी कला केवल धार्मिक कला नहीं है बल्कि इसमें हर प्रकार की कलाऐं शामिल है।

खुशनवीसी (सुलेख)

मुसलमानों का कुर्आन से प्यार व गहरे सम्मान की वजह से खुशख़ती (सुलेख) की कला ने जन्म लिया और जल्दी ही तमाम मुस्लिम दुनिया में अपने उन्नत्ति को पंहुच गयी। कुरानी आयतों (पंक्तियों) ने मस्जिदों, महलों, घरों कारोबारों और कुछ सार्वजनिक स्थानों को सजाया। प्रायः सुलेख का इस्तेमाल सजावटी नक्श-व- निगार के साथ सबसे ज़्यादह मुक़द्दस (पावन) और कीमती (बहुमुल्य) चीज़ों को सजाने के लिये किया गया।

कई सदियों में मुस्लिम जगत के विभिन्न इलाकों में कई लिपियों (लिखावटों) ने जम्न लिया। अरबी खुशख़ती (सुलेख) के ख़ास अन्दाज़ निम्नलिखित हैं।

कुफ़िक़ (KUFIC)

कुफिक़ क़रीब क़रीब वर्गाकार औ रतीखे कोनो वाली लिखावट है। इसकी पहचान इसके भारी, स्पष्ट तथा ज्यामितिय अन्दाज़ से होती है। इसके अक्षर आमतौर से दबीज़ (मोटे) होते हैं और पत्थर या धातु पर नक्क़ाशी के लिये, मस्जिदों की दिवारों पर नक्शन व कतबे कुन्दा (खोदने) के लिये या रंगों से लिखने के लिये, और सिक्कों पर हर्फ़ (शब्द) बनाने के लिये यह उपयुक्त लिपि है।

नस्ख़ (NASKH)

नस्ख़, अरब संसार की शायद सबसे ज्यादह पसंदकी जाने वाली लिखावट है। यह एक प्रवाही (घसीट) लिपी है इसके अक्षरों के बीच के अनुपात (तनासुब) के लिये कुछ बुनियादी कानूनों का पालन होता है। नस्ख़ आसानी से पढ़ी जाने वाली, साफ़ लिखावट है जिसको वरीयता के तौर पर लिपिबद्ध तथा छापने के लिये अपनाया गया था। इसकी अनगिनत शैलियों (अन्दाज), किस्में पैदा हुई जिनमें तालीक़ (TA'LIQ), रिक़ (RIQA') और दिवानी (DIWANI) शामिल हैं। यह नये ज़माने की अरबी लिखावट की जनक (जन्मदाता) बन गयी ।

थूलूथ (THULUTH)

यह लिपी सजावटी लिखावटों में सबसे ज़्यादह महत्वपूर्ण है और इसको लिपि शैलीयों का राजा कहा जाता है। यह आमतौर से शीर्षकों, धार्मिक नक्श व कतबों, राजसी उपाधियों और शिलालेखों को लिखने के लिये प्रयोग की जाती है।

तालिक (TA'LIQ)

यह लिपी ख़ास तौर से फ़ारसी भाषा की जरूरतां को पूरा करने के लिये बनायी गयी और आज भी ईरान, अफ़गानिस्तान तथा भारतिय उपमहाद्वीप में इसका बहुत इस्तेमाल होता है। तालिक़ एक कोमल (नरम) और सुन्दर लिखावट है।

दिवानी (THE DIWANI)

बहुत अधिक प्रवाही (घसीट) और बहुत ज्यादह बनावट वाली लिपी है। इसके अक्षर बग़ैर किसी क़ानून और स्वर व्यजनों के एक दूसरे से जुडे होते है। इसकी उत्पत्ति तुर्कों के प्रारंभिक शासन काल (१६ वी शताब्दी से प्रारंभिक १७ वीं शताब्दी) के दौरान हुई ।

खुशनवीसी (सुलेख) कुछ और क़िस्में भी हैं जो ज़्यादह मशहूर नही है लेकिन किसी भी तरह कम खुबसूरत नहीं जैसे रिका (RI'QA), महक़क (MUHAQQAQ) रेहानी (RAYHANI), इजाज़ा (IJAZA) और मोरोक्कन (MOROCCAN)

इस्लामी फ़न-ए-तामीर (वास्तुकला)

इस्लामी दुनिया की निर्माण कला (फ़न-ए-तामीर) को तमाम इतिहास में उसकी अध्यात्मिक आधार यानी कुर्आन से मज़बूती मिली है।

इस्लामी शहरों में सभ्य शहरी इलाक़े दस्तकारों की नस्लों के साथ बहुत लम्बे समय से वजूद में आचुके थे जिनके अनुभवों ने माहौल में विभिन्न प्रकार के फ़नों (शिल्पों) को शामिल कर दिया।

उस वक़्त के शहरों को, मदरसों, बाज़ारों,महलों और घरों के बीच एक मस्जिद के फ़न -ए- तामीर से जोड़कर खूबसूरत बनाने के बारे में सोचा गया ।

समय के साथ साथ मस्जिदों और महलों की तामीर और सजावट फैलती गयी। शिल्प कला ने लम्बी छलांगे लगायीं, एक गुंबद की कल्पना जिसके नीचे इबादत के लिये बड़ी जगह हो, से मस्जिद की दीवारों तक जिस पर अल्लाह की गरिमा में कतबे खुदे हुऐ हों ।

इस शिल्प में संयुक्त विषय इन्सानों और जानवरों का फोटो इस्तेमाल न करना है। आप पायेंगे कि सुलेख का प्रयोग करते हुऐ सजावट का ज़्यादह झुकाव अल्लाह की तारीफ़ में लिखे हुऐ शब्दों पर है।

एक आदर्श इस्लामी घर के कुछ खास हिस्से होते हैं, एक ढका हुआ आंगन जो ख़ानदान के लोगों की बाहरी लोगों और ख़राब माहौल से बचाये । आप देखेंगे कि बाहर से यह मकान बहुत सादा होता है जबकि अन्दर के हिस्सों पर ख़ास ध्यान दी जाती है। वक़्त पड़ने पर इस चहारदीवारी के अंदर एक दूसरा घर भी बनाया जा सकता है। जो बढ़े हुऐ खानदान के प्रयोग में आ सके ।
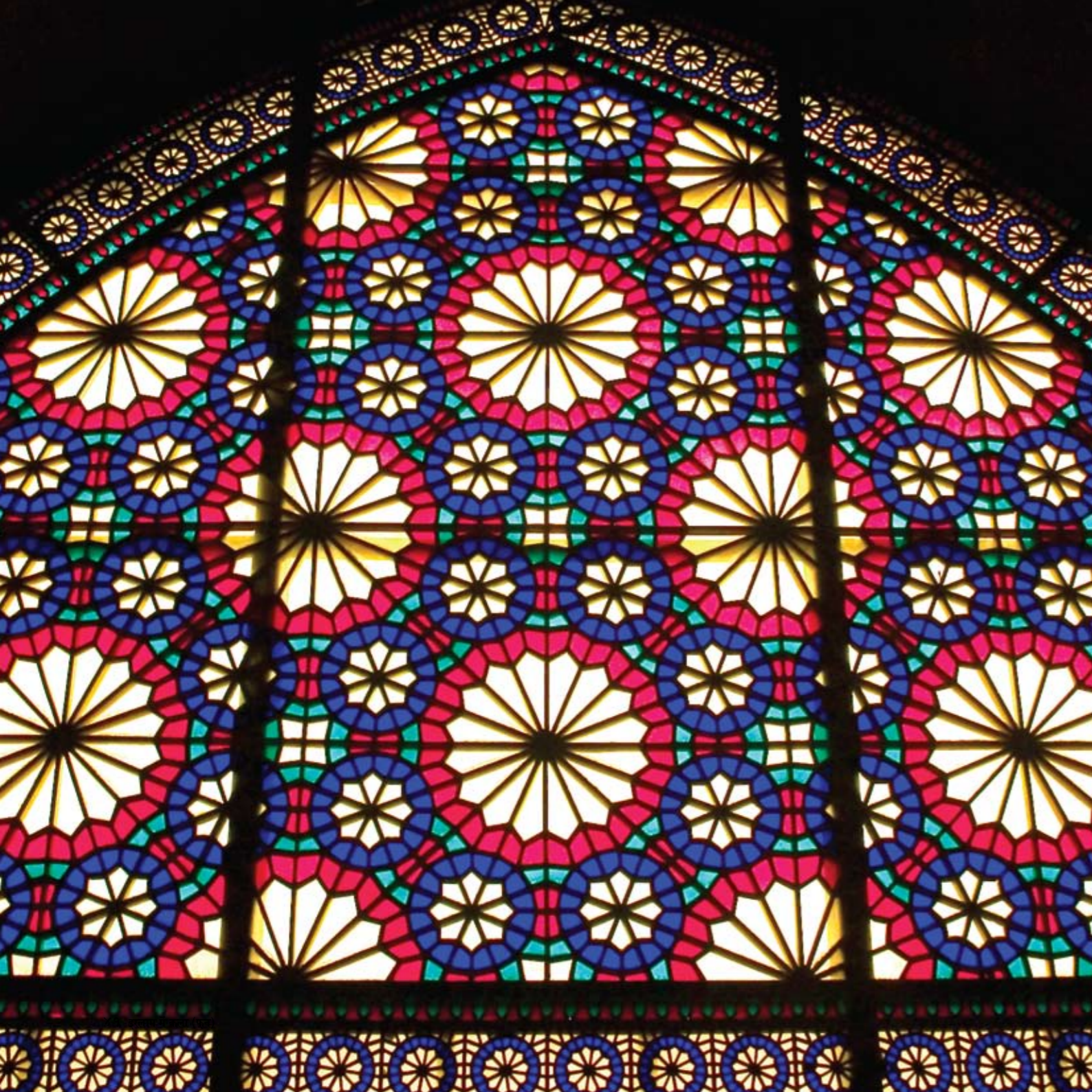
इस्लामी रंगीन शीशे

इमारतों की सजावट में रंगीन शीशे के प्रयोग का सबसे पुराना वर्णन ७वीं शताब्दी मिस्र में मिलता है। बाद में नयी आसारेक़दीमा (पुरातात्विक) खोजों ने इसके साथ नवीं शताब्दी में मिस्र और वियतनाम के दरमियान होने वाले रंगीन शीशे के कारोबार को भी जोड़ दिया। फिर भी युरोपा में ११५० और १५०० के बीच रंगीन शीशे की कला अपने अरूज (बुलन्दी पर थी) जब गिरजाघरों की शानदार खिड़कियां इन रंगीन शीशों से बनायी जाती थीं। रंगीन शीशों पर ज्यामितिय शक्लों, खुशनवीशी (सुलेख) और इस्लामी पुष्प सज्जा जैसे विषयों का प्रभाव तुर्क क्षेत्रों में बहुत अधिक था। जब कोई कलाकार हम आहंगी (मेल), एकता, खुबसूरती के तारीखी उसूलों की तममा करता है तो इनको वह शीशे की सतह पर रोशनी और रंगो से कई गहराईयों वाले नक्श औा सजावटें उकेरता है।

इसके उदाहरण हर छोटी बड़ी चीज़ में देखे जा सकते हैं, बड़ी मस्जिदों की सज्जा जैसा कि तुर्की माहिर तामीरात (वास्तुकला का तज्ञ) मीमार सीनन (उपउंते पदंद) ने मुस्लिम दुनिया के विभिन्न भागों में की। उनके द्वारा सजाये गये रास्तों पर लगे हुऐ लैम्प जिन्होने मुस्लिम नगरों को सैकड़ों साल पहले जगमगाया था।

बेल बूटे का काम (अराबस्क)

भूमेख या ज्यामितिय आकारों को दोहराने के विस्तृत प्रयोग को बेलबूटे का काम कहा जाता है जो प्रायः पशुओं तथा पेड़ों का प्रतिविम्ब होता है। यह इस्लामी कला का एक तत्व है जो प्रायः मस्जिदों, घरों, बाजारों, होटलों के दरवाज़ो तथा खिड़कियों की सजावट में पाया जाता है। किसी रचना के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले ज्यामितिय आकारों का चयन मुसलमान कलाकार की रचनात्मकता तथा उसकी संसार को परख्ने की विद्वता पर निर्भर करता था। यह कला सुलेख के साथ यदा कदा ही मिलती है।

इस कला में प्रायः ज्यामितिय आकारों का बार बार इस्तेमाल होता है जो अपने अंदर बहुत से गुप्त अर्थ छुपाये रख्ती है। उदाहरण के लिये एक सरल 'वर्ग', इसकी चार समभुजाओं द्वारा कलाकार कुदरत के चार महत्वपूर्ण तत्वों धरती, वायु, अग्नि तथा जल को एक चिन्ह द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। वृत्ताकार आकार कैसे भी स्रष्टा की अनन्तता, अभिन्नता (अल्लाह एक है अकेला है) को दर्शाता है।

पर्यावरण (माहौल)

इस्लाम में पर्यावरण तथा मानवजाति के बीच संबंध को स्थिति इस तथ्य पर आधारीत है कि धरती पर प्रत्येक वस्तु अल्लाह की इबादत करती हैं। यह इबादत केवल ओपचारिक अभ्यास, मात्र नहीं है बल्कि उनके कार्यो से ऐसा दिखायी देता है। इसका अर्थ है कि यह मुसलमानों की आस्था विश्वास (यक़ीन) का अंग है कि पर्यावरण को बर्बाद मत करो, इसके अलावा मानव इस भूमण्डल के पर्यावरण के दूसरे वासियों की अच्छाई एंव संपोषण (भोजन आदि) के लिये जिम्मेदार है। जैसा कि यह है कि पशु तथा वनस्पति जगत उनके अपने पर्यावरण को नष्ट नहीं करते है।

वृक्षों का संरक्षण

नबी मुहम्मद ने कृषि (खेती) से संबंध रखने वाले साधनों की वृद्घि तथा फ़ायदेमंद माहौल को बढ़ावा देने के लिये कृषि को बढ़ावा दिया था। उनके मुताबिक ''जब कभी एक मुसलमान एक हरा भरा पौधा या वृक्ष लगाता या उगाता है और कोई पशु, मनुष्य या अन्य कोई उसको खाता है तो इसका हिसाब उसके भलाई के कामो की तरह होगा'' (अल-बुख़ारी)

नबी मुहम्मद ने सर्वप्रथम पर्यावरण आरक्षण क़ायम किया था जिसके तहत वृक्षों को काटा नहीं जा सकता था और पशुओं की हत्या नहीं की जा सकती थी। उन्होनें पूरे मदीना को इसके लिये सुरक्षित किया, यहां किसी पेड़ को काटा या उखाड़ा नहीं जा सकता था और केवल इतने आकार की लकड़ी काटी जा सकती थी जो एक ऊंट को हांकने के लिये काफ़ी हो: वह कहते है : ''यह पुण्य एंव पावन स्थल है इसका एक भी पेड़ नहीं काटा जा सकता सिवा उस आदमी के जो अपने ऊंट चरा रहा है'' (अल-बुख़ारी से वर्णित)

उन्होनें यह भी कहा: ''मैने मदीना जो दो जली हुई चट्टानों के बीच स्थित है, के पेड़ों (वृक्षों) को काटने से रोका है'' (अल-बुख़ारी से वर्णित)

जल

जल स्रोतों, रास्तों तथा अन्य सार्वजनिक पर्यावरण क्षेत्रों को प्रदूषित करने पर प्रतिबंध वगैरह इस्लाम के कुछ ऐसे निर्देष हैं जिनका मक़सद माहौल को सेहतमंद तथा प्रदूषण मुक्त रखना है। इस्लाम प्रत्येक व्यक्ति (नागरीक) का यह कतर्व्य बताता है कि वह माहौल की हिफ़ाज़त करें इसकी अशुद्धता की निन्दा करें।

''तुम्हारी तुमसे पहले की पीढ़ीयों (तुमसे पहले के लोगों में) कुछ ऐसे लोग क्यों नहीं सामने आये जो पृथ्वी पर भ्रष्टाचार (बुराई) के ख़िलाफ़ उपदेश देते?'' (क़ुर्आन ११, ११६)

''ठहरे (रुके) हुऐ पानी में किसी को मूत्र त्याग से रोको'' (अल - बुख़ारी) ''तीन कामों से बचो जो लोगों पर गुनाह लाती है : जल स्रोत में, रास्तों तथा साये की जगह पर मूत्र का त्याग'' (अबु-दाऊद)

पशुओं की देख-रेख

इमाम इब्न-ए- हज़्म अपनी पुस्तक अल-मुहल्ला में कहतें हैं :

''पशुओं पर दया परोपकार तथा भक्ति है : और जब एक मनुष्य पशु की ख़ुशहाली के लिये सहायता नहीं करता तो वह पाप तथा अक्रामकता को बढ़ावा दे रहा है तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर की नाफ़रमानी (अवज्ञा) कर रहा है''

पशुओं को भोजन एंव जल न देना, तथा फल देने वाले वृक्षों तथा पौधों को जल देने को उपेक्षा करना ईश्वर के अपने शब्दों में कहे अनुसार धरती पर भ्रष्टाचार है तथा वृक्षों एंव नस्लों (संतति) का सर्वनाश है।

ईश्वर ने एक वेश्या को इसलिये क्षमा कर दिया था क्योंकि जब उसने रास्तें में कुँअे के पास एक कुत्ते को हांफ्ते हुऐ देखा कि वह प्यास के कारण मरने के करीब है तो उसने अपनी जूती उतारी तथा उसको अपने दुप्टे से बांधकर कुँअे से उस कुत्ते के लिऐ जल निकाला। इसलिय ईश्वर ने उसको उसके इस अच्छे काम के लिय क्षमा कर दिया। (अल-बुख़ारी)

नबी उसको बददुआ देता है जो जीवित वस्तु की हत्या मात्र मनोरंजन (जैसा कि शिकार) के लिये करता है (मुस्लिम)

नबी ने पशुओं को मनोरंजन या खेल के आपस में लड़ना सिखाना प्रतिबंधित किया (अल-तिरमिज़ी)

शहरों को साफ रखना

नबी मुहम्मद लोगों पर अपने शहरों को स्वच्छ रखने तथा प्रदूषित ना करने पर बल दिया करते थे। वे कहतेः मुझे मेरे मानने वालों के कार्य दिखाये जा चुके है। दोनो अच्छे तथा बुरे। मैने पाया कि लोगों के चलने वाले रास्तों से नुक़सान पहुँचाने वाली वस्तुओं को हटाना उनके अच्छे कार्यो में से है। (मुस्लिम) उन्होने यह भी कहा: आस्था (यक़ीन) की ७० शाखें हैं ... इसमें सबसे आसान किसी रास्ते से नुक़सान पहुचाने वाली चीज़ को हटाना है। (मुस्लिम).

समुदाय (बिरादरी)

नबी मुहम्मद ने किसी व्यक्ति या समुदाय को हानी पहुचाने को निषेध किया जैसा कि वह कहते है: ''स्वयं या किसी दूसरे को हानी नहीं पहुंचायी जायेगी। (अल नववी की चालीस हदीसें)

उन्होने अपने पड़ोसी, कोई पड़ोसी चाहे घर में, सार्वजनिक यातायात में सार्वजनिक स्थान या कार्यालय में हो उसको नुकसान पहुंचाने से रोका। उन्होने कहा: जो भी ईश्वर में तथा क़यामत में आस्था (यक़ीन) रखता है उसके द्वारा पड़ोसी को आहत नहीं करना चाहिऐ। (अल-बुख़ारी)

इस्लाम में औरतें (महिलाऐं)

इस्लाम ऐसे वक़्त प्रकट किया गया जब सारी दुनिया में ज़्यादातर लोग स्त्रीयों की मानवता को नकार चुके थे । उनको उप-मानव का दर्जा दिया गया था या नहीं परन्तु उनकी उत्पत्ति पुरूषों की सेवा मात्र की वस्तु के रूप में समझी जाती थी ।

इस्लाम ने औरतों के अधिकार जो पतित समाज द्वारा समाप्तकर दिये गये थे स्त्रीयों को वापस कराये। इस्लाम ने स्त्रियों की गरिमा (इज़्ज़त) तथा मानवता को वापस दिलवाया और उनको पुरूषों के बराबर का दर्जा दिलवाया। लड़कियों की शिशुहत्या को गैरक़ानूनी बनाया तथा स्त्रीयों को उत्तरधिकार का हक़ दिलवाया जो पहले मौजूद नहीं था। दूसरी चीजों में, स्त्रीयों को अपना व्यक्तिगत सामान रखने का हक़ प्राप्त हुआ था। इसलिए वह अपने पास धन व संपत्ति रख सकती थी। (जिसमें यह ज़रूरी नहीं था कि यह धन वह अपने परिवार पर ख़र्च करें), शादी की रज़ामंदी का हक़ (उसकी मर्जी जरूरी थी), और शादी के बाद भी शादी से पहले के नाम को इस्तेमाल करने का हक़ शामिल थे । वे अब तलाक़, शिक्षा, वोट देने का हक रखती थी। उनको अनेक हक़ हासिल हुऐं जिन्होंने उनको ना सिर्फ़ पुरूषों के बराबर के स्तर तक पहुँचाया बल्कि उनके दर्जे को कई मामलों मे पुरूषों से उंचा कर दिया ।

अबु हेरा से रवायत है कि एक व्यक्ति नबी मुहम्मद के पास आया और पूछा ''ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, इन समस्त लोगों मे सबसे अच्छा इन्सान कौन है जो मेरी दया का हक़दार है और जिसको मैं अपना अच्छा साथी बनाऊँ ? आप, नबी मुहम्मद ने उत्तर दिया '' तुम्हारी मा '' उस व्यक्ति न पूछा 'उसके बाद'' उन्होने उत्तर दिया ''तुम्हारी मां'' उसने फिर कहा ''उसके बाद'' आप ने फिर कहा ''तुम्हारी मां'' और उसके (यानी मां) के बाद? नबी मुहम्मद ने उत्तर दिया ''तुम्हारे पिता'' (अल-बुख़ारी और मुस्लिम हदीसों से प्राप्त)

हाल ही में पश्चिम में औरतों को कई अधिकार, इसके साफ़ उदहारण है, अपनी संपत्ति रखने का अधिकार, अपनी म़र्जी से काम करने और तलाक़ का अधिकार । इन अधिकारों ने १९ वी शताब्दी में कानून का रूप ले लिया था। इससे हट कर कुछ समाजों में, (मुस्लिम समाज को छोडकर) संस्कृति के ग़लत मार्गदर्शन के कारण लड़की के जन्म को आज भी एक बोझ समझा जाता है। गर्भपात द्वारा लड़कियों की शिशुहत्या भी आम है जिससे ऐसे समाजों मे स्त्रीयों तथा पुरूषों की संख्या के मध्य एक बड़ा अंतर पाया जाता है।

औरतों के दर्जे पर इस्लाम का नज़रिया कुर्आन की निम्नलिखित आयत से संक्षिप्त में वर्णित किया जा सकता है।

''उनके ईश्वर ने उनको जवाब दिया है,'' मैं तुममें से किसी को भी उसके कामों का इनाम देने से कभी नहीं चुकता हूँ, चाहें नर हो या मादा, तुम एक दुसरे के समान हो.(कुर्आन ३,१९५)

इस्लाम में बच्चों के अधिकार

इस्लाम आने से पहले विश्व के अधिकांश भागों में बच्चों के साथ बहुत अधिक दुर्व्यवहार किया जाता था जिसमें सबसे बुरा व्यवहार था जन्म के तुरत्न बाद बच्चों की शिशुहत्या थी। यह प्रथा ग़रीबी के भय से, गढ़े हुए ईश्वरों को बलिदान करने के भाव से या पुत्री के जन्म पर समाज में होनेवाली बदनामी से बचने के लिय की जाती थीं।

कुरान ने समस्त अभानविय प्रथाओं की अस्वीकृत किया तथा बच्चों को अनेक अधिकार दिये, उनको भोजन,वस्त्र दिये जाने तथा सुरक्षा के अधिकार दिये, अपने माता पिता से प्रेम तथा स्नेह पाने का अधिकार, भाई बहनों के मध्य उनके प्रति समान व्यवहार का अधिकार, शिक्षा तथा उपयुक्त उत्तरधिकार का अधिकार प्रदान किया।

कहते है ''आओ मैं वह बताता हूँ जो तुम्हारे ईश्वर ने तुम पर निषेध किया है (वह आदेश देता है) कि तुम उसके साथ किसीको शामिल मत करो, और माता पिताओं को अपने बच्चों से अच्छे व्यवहार के लिय तथा ग़रीबी के कारण अपने बच्चों से अच्छे व्यवहार के लिय तथा गीरबी के कारण अपने बच्चों की हत्या न करने का, हम तुमको व उनको उपलब्ध करायेंगे...''(कुर्आन ६,१५)

इसके अलावा बच्चे के दिमाग़ को पोषित करना चाहिये इसके लिय शिक्षा अनिवार्य है। बच्चे का हृदय आस्था से भर देना चाहिय। उचित मार्गदर्शन, ज्ञान और बुद्धि, नैतिकता तथा अच्छा आचरण बच्चे के दिमाग़ में डालना उसके विकास के लिये जरूरी है। '' अल्लाह से डरो और अपने (छोटे यो बड़े) बच्चों से अच्छा सुलूक (व्यवहार) करो (समान इन्साफ़ के साथ)'' (बुख़ारी तथा मुस्लिम हदीसों से प्राप्त)

इस्लाम में मानवधिकार एंव सजातिय अल्पसंख्यंक

इस्लाम ने मावन समाज को १४ शताब्दी पूर्व मानवधिकारों की आर्दश संहिता प्रदान की। इन अधिकारों का मक़सद मानव जाति को आदर तथा गौरव प्रदान करना तथा शोषण, अन्याय तथा दमन का निराकरण करना था। इन अधिकारों को नबी मुहम्मद के अंतिम उपदेश (खुतबे) में संक्षिप्त किया गया है और अत्यधिक विचार के बाद इनको प्रथम मानवधिकारों के रूप में घोषित किया गया। यह अधिकार समस्त समुदायों चाहे मुसलमान हों या ना हों,नर, मादा, वह जो युद्ध में हैं या शांति के समय में, सब के लिय उनके अधिकारों की अल्लाह की ओर से गारंटी दी गयी।

''समस्त मानवजाति आदम व हव्वा से पैदा हुऐ हैं। एक अरबी मनुष्य किसी ग़ैर-अरबी से उत्तम नहीं होता है और ना ही एक ग़ैर - अरबी किसी अरब के मनुष्य से उच्च है। इसी प्रकार एक गोरी चमड़ीवाला काली चमड़ी वाले से उत्कृष्ट है और ना ही काली चमड़ीवाला एक गोरी चमड़ीवाले से उत्तम है। केवल उसकी भक्ति व अच्छे कार्यों के अलावा'' (अंतिम उपदेश (खुतबे)उद्धरित)

इस्लाम में मानवधिकार की जड़ें इस यकीन ने मज़बूत बनाई हैं कि अल्लाह और सिर्फ़ अल्लाह कानून एवं तमाम मानवधिकारों का बनानेवाला है। इन मानवधिकारों की दिव्य उत्पत्ति के कारण जो अल्लाह ने प्रदान किये हैं, कोई शासक, सरकार, सभा या सत्ता इनको किसी भी प्रकार कम उपेक्षा नहीं कर सकता और ना ही इनको छोड़ा जा सकता है।

यह मानवधिकार मुस्लिम समाज में रहनेवाले गैर-मुस्लिमों के लिये भी सुस्पष्ट है। नबी मुहम्मद मदीना में बीमार लोगों में मुसलमानों के साथ साथ यहूदियों को भी देखने जाते थे। जब एक यहूदी का जनाज़ा आप के निकट से गुज़रा तो आप आदर से खड़े हो गये। अस्पतालों में धर्म और सामाजिक प्रतिष्ठा को जाने बग़ैर लोगों को भर्ती (उनका इलाज किया जाता था। सरकारी स्तर पर ईसाई तथा यहूदी सत्ता की मुख्य धारा में पहुंच गये थे। मुस्लिम पाठशालाओं, विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में ईसाइयों तथा यहूदीयों के दाखले होते थे तथा सरकारी खर्च पर उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था होती थी।

स्पेन मे धर्मधिकरण के समय में यहूदी जो मुस्लिम बहुल स्पेन में ७०० वर्षो तक मुसलमानों के साथ एकता व सम्पन्नता से रहते आये थे मुसलमानों के साथ स्पेन से पलायन कर रहे थे, उनके लिये मुस्लिम जगत एक सुरक्षित आश्रय (ठिकाना) था।

'' जो कोई भी एक निर्दोष आत्मा की हत्या करता है। जो एक जीवित की हत्या करता है या समाज का विनाश करता है यह ऐसा ही कि जैसे वह समस्त मानवता की हत्या करता है। तथा जो काई भी एक निर्दोष आत्मा की रक्षा करता है तो वह ऐसा ही है जैसे उसने समस्त मानवता की रक्षा की है'' (कुर्आन ५,३२)

नबी मुहम्मद (अल्लाह की उनपर शांती रहे) का अंतिम घर्मोपदेश (खुतबा)

शनिवार ७ मार्च ६२३ CE
संसार में मग्ना कारटा, अधिकारों के विधेयक तथा यू.एन.मानवधिकार संहिता से पूर्व होनेवाली मानवाधिकार घोषणा।

'' ऐ लोगों जैसा कि तुम इस महिने, इस दिन, इस शहर को पुण्य समझकर इसका आदर करते हो वैसे ही प्रत्येक मुसलामन के जीवन तथा सम्पत्ति को पुण्य धरोहर जान कर उसका आदर करो सामान जो तुम्हें सौपा गया था उसको उसके असली मालिक को लौटा दो। किसी को चोट मत पहुंचाओ ताकि तुम को कोई चोट न पहुंचाये। याद रखो वास्तव में तुम अपने ईश्वर से मिलोगे तब वह तुम्हारे कार्यो का हिसाब करेगा। अल्लाह ने तुम पर ब्याज को हराम किया है इसी कारण ब्याज के समस्त क़रारनामे अब से छोड़ दिये जायेंगे । तुम्हारी पूंजी तुम्हारी अपनी है अपने पास रखो। तुम्हारे साथ कोई नाइंसाफी नहीं होगी और न ही तुम पर इसको थोपा जायेगा। अल्लाह का फ़ैसला है कि अब कोई ब्याज नहीं होगा...

''ऐ लोगों, यह सच है कि निश्चित ही औरतों के प्रति तुम्हारे कुछ अधिकार हैं परंतु उनके भी तुम पर अधिकार हैं। याद रखो तुमने उनको अल्लाह की मर्ज़ी तथा अनुमति से अपनी पत्नि बनाया है अगर वे तुम्हारे अधिकारों का आदर करती हैं तो उनका अधिकार है कि उनको रहमदिली से भोजन तथा कपड़े दिये जायें । अपनी पत्नियों से अच्छा व्यवहार करो और उनके लिये रहमदिल रहो क्योंकि वह तुम्हारी साथी हैं और वचनबद्ध सहायक हैं । और यह तुम्हारा अधिकार है कि वे तुम्हारे घरों में किसी को दाख़िल होने की इजाज़त न दें जिनको तुमने मना किया हो और कभी भी कुकृत न हों (पाकदामन रहें)।...

'' समस्त मानवजाति की उत्पत्ति हज़रत आदम तथा हौव्वा से हुई है। एक अरबी मनुष्य किसी ग़ैर-अरबी से उच्च नहीं और न ही एक ग़ैर -अरबी किसी अरबी से उत्तम है। एक सफ़ेद चमड़ी वाला काली चमड़ी वाले से अच्छा नही है और न ही एक काली चमड़ी वाला सफ़ेद चमड़ी वाले से उत्तम है सिवाय अच्छे कार्यों तथा भक्ति के। याद रखो हरेक मुसलामन दूसरे मुसलमान का भाई है और मुसलमान भाईचारे की रचना करनेवाले हैं। जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अपनी मर्ज़ी और आज़ादी से नहीं देता है वह उसके लिये जायज़ नहीं । इसी वजह से अपने आप पर जुल्म मत करो...

''ऐ लोगों मेरे बाद कोई नबी या पैग़म्बर नहीं आयेगा और न ही किसी नयी आस्था (विश्वास) का जन्म होगा । तसर्थ अच्छी तरह विवके से सोचो और इन शब्दों को जो मैं तुम तक पहुंचा रहा हूँ समझो । मैं अपने पीछे दो चीज़े छोड़ जाऊंगा, 'कुर्आन' और मेरी 'सुन्नत'(पद्दति) यदि तुम इनका पालन (अनुसरण) करोगे तो तुम कभी भी राह से नहीं भटकोगे ।...

''तमाम लोग जिन्होने मेरी बातें सुनीं वे मरे शब्दों को दूसरों तक आगे पहुंचा दें और वे अपने से आगे वालों को, कुछ पहुंचाए गए लोग प्रत्यक्ष मुझसे सुनने वालों की अपेक्षा मेरी बातों को ज्यादह अच्छी तरह समझ सकेंगे । ऐ अल्लाह गवाह रहना, कि मैं ने तेरा पैग़ाम (संदेश) तेरे लोगों तक पहुंचा दिया ।

हज़रत उमर का क़रारनामा (समझौता)

जब दूसरे खलीफ़ा उमर इब्ने अल-ख़त्ताब ने एक मुस्लिम फ़ौज के सरदार के रूप में ६३८ब्ल येरूशलम में प्रवेश किया तो नम्रता के तौर पर नंगे पांव प्रवेश किया। कोई ख़ून खराबा नहीं हुआ था। जो जाना चाहते थे उनको उनके सामान के साथ सुरक्षित जाने की इजाज़त दी। जो रूकना चाहते थे उनको उनकी जान, माल, इबादतगाहों की सुरक्षा के साथ रहने की इजाज़त दी गयी। उन्होने आत्मसमर्पण किये हुऐ शहर के मुख्य दण्डाधिकारी पैंटरियास्क सोफ़रोनियस के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था कि प्रतिदिन की पांच नमाज़ों में से एक नमाज़ को पवित्र सेपुल्चर के गिरजाघर में अदा किया जाये, और आने वाले सालों में मुसलमानों द्वारा उनकी याद में इस गिरजाघर को मस्जिद में परिणित करने के प्रयास को भी अस्वीकार कर दिया था।

''शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहम करने वाला है और बड़ी कृपा करने वाला हे। यह अल्लाह के माननेवालों के सेनापति अल्लाह के गुलाम उमर की ओर से इलिया (येरूशलम) के वासियों के शांति और सुरक्षा का आश्वासन है। मैं तुम को, जो स्वस्थ है, अस्वस्थ है और समस्त धार्मिक समाजों के लोगों को तुम्हारे जीवन,संपत्ति, गिरजाघरों और सूलियों की सुरक्षा का आश्वासन देता हूँ। तुम्हारे गिरजाघरों पर अधिकार नहीं किया जायेगा, उनको तोड़ा नहीं जायेंगा और न ही उनको या उनका कोई हिस्सा तुम से लिया जायेगा। तुम्हारे धर्म में तुम्हारा दमन नहीं किया जायेगा और न किसी को आहत किया जायेगा...

इलिया के लोगों को एक कर (जिज़िया) (एक विशेष कर जो उन ग़ैर - मुस्लिमों को देना था जो मुस्लिम शासन में रह रहे थे और नागरिकता के लाभ तथा सेना से मुक्ति का लाभ ले रहे थे) देना था जैसा कि शहरों में रहनेवाले अदा करते है...

जो कोई यहां से जायेगा उसके जीवन तथा सम्पत्ति की सुरक्षा का जब तक वह अपने सुरक्षित आश्रय तक न पहुँच जाये, आश्वासन दिया जाता है। जो कोई यहां रहना चाहेगा तो उसे उतना ही कर भुगतान करना होगा जितना इलिया की जनता करती है। इलिया की जनता का कोई भी व्यक्ति अपने गिरजाघरों से अपनी संपत्ति, सूलियों तथा रोमवासियों के साथ जाने के इच्छुक हैं तो उनको उनके जीवन, गिरजाघरों , सूलियों के सुरक्षा की गारण्टी दी जायेगाी जब तक वे अपने सुरक्षित आश्रय तक न पहुंच जाएं। जो कोई भी रोमवासयों के साथ जाना चाहता है वह ऐसा कर सकता है और जो कोई अपने निवास स्थान और स्वजनों में लौटना चाहता है, ऐसा कर सकता है उनसे उनकी फ़सल के तैय्यार होने तक कुछ भी नहीं लिया जायेगा। इस करारनामे के अंश जो इसमें लिखे हुऐ हैं, अल्लाह के उसके नबी के, खलीफ़ा तथा समस्त मुसलमानों की ज़मानत हैं, यदि वे (इलिया के लोग) जो उन पर देना वाजिब (जज़िया कर) है उसका भुगतान करते रहेंगे।''

इसके गवाह हैं: ख़ालिद इब्नुल वलीद, अर्ब्दुरहमान इब्न-ए औफ़, अम्र इब्नुल - आस और मोआविया इब्ने अबी सुफियान। वर्ष१५ ॅ में तैयार तथा लागू किया गया।